सत्यमेव जयते

कावेरी

27वां अंक

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु - 560001

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर महालेखाकार महोदया द्वारा कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण

कावेरी

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु -560001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कावेरी हिंदी पत्रिका – 2022

अंक-27

संदेश
महालेखाकार

मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कावेरी' के 27वें अंक का ई-प्रकाशन किया जा रहा है जोकि हमारे कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कार्यालयीन दायित्वों के अतिरिक्त उनके अथक प्रयासों से संभव हुआ है। हिंदी हमारे राष्ट्र की राजभाषा है एवं कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए 'कावेरी' पत्रिका हमारे कार्यालय का एक सामूहिक प्रयास है जिससे अधिकारियों व कर्मचारियों की राजभाषा के प्रति निष्ठा झलकती है।

मैं पत्रिका के संपादक मण्डल, सभी रचनाकारों तथा पत्रिका से जुड़े सभी कार्मिकों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए बधाई देती हूँ एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करती हूँ।

(सुश्री स्मिता गोपाल)
महालेखाकार (ले.व.ह.)

अभिनंदन
उप- महालेखाकार

कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'कावेरी' के नवीनतम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करना अत्यंत हर्ष का विषय है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का योगदान सराहनीय है। इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कावेरी' भी इस दिशा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह पत्रिका कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में करने के लिए प्रेरणा व प्रोत्साहन का कार्य करती आ रही है। किसी भी भाषा का महत्त्व उस भाषा के प्रयोग से ही संभव है और हिंदी के प्रयोग के लिए यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूँ। 'कावेरी' पत्रिका की निरंतर प्रगति की कामना करता हूँ।

(श्री के. विघ्नेश्वरन)
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

'कावेरी' का 27वां ई-अंक विभिन्न विधाओं से सुसज्जित आपके समक्ष सस्नेह प्रस्तुत है।

पत्रिका का प्रकाशन, पाठकगण के बहुमूल्य विचारों तथा कार्यालय के कर्मियों के राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अमूल्य योगदान से ही संभव हो सका है। 'ग' क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद राजभाषा के संवर्धन में हमारे कार्यालय के कर्मी हिंदी में काम-काज एवं लेखन के माध्यम से प्रयासरत है जिसका प्रमाण इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ है। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य अधिकारियों व कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रुचि जागृत एवं प्रोत्साहित करना है।

'कावेरी' के 27वें अंक की सफलता की कामना करते हुए आशा करती हूँ कि सभी पाठकगण पत्रिका का यह अंक पसंद करेंगे एवं अपने बहुमूल्य सुझावों से हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

शिवप्रिया-बी

(श्रीमती शिवप्रिया बी.)
वरिष्ठ लेखाधिकारी (हिंदी कक्ष)

प्रकाशन :

कावेरी हिंदी गृह पत्रिका

प्रकाशक :

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

अंक :

सत्ताइसवाँ (27)

उद्देश्य : राजभाषा का संवर्धन, संबंधित कठिनाइयों का निवारण एवं कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं।

संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक :

सुश्री स्मिता गोपाल

महालेखाकार

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय

कर्नाटक, बेंगलूरु

संरक्षक :

श्री के. विघ्नेश्वरन

उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक :

श्रीमती शिवप्रिया बी.

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष

उप-संपादक :

निशा कुमारी : वरिष्ठ हिंदी अनुवादक **संदीप : कनिष्ठ हिंदी अनुवादक**

तकनीकी सहयोग एवं पत्रिका की साज-सज्जा : श्री दलीप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।

नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन सन्निधिम कुरु ॥

भारतीयों में यह मान्यता है कि – पवित्र तीर्थस्थलों के दर्शन न कर सकें तो, दृढ़ विश्वास के साथ उन तीर्थस्थलों का स्मरण करते हुए स्नान किया जाए तो वही सुफल प्राप्त होता है जो उनके प्रत्यक्ष दर्शन करने से प्राप्त होता है । इन्हीं पुण्य तीर्थों का स्मरण है उपरोक्त स्तुति ।

- **टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए ।**
- **मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए ।**
- **शब्दों में अटकिए नहीं ।**
- **अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।**
- **अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए ।**

आपके पत्र

स्पीड पोस्ट

संख्या/No. हि.अ./ले.प./प्रशिक्षण/37/21-22/206

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001
दिनांक/Date : 24/11/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/मा.सं.वि.
प्रधान महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी),का कार्यालय
कर्नाटक,बेंगलुरु-560001

विषय- "कावेरी" हिंदी पत्रिका के 26 वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कावेरी" के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष बधाई एवं धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। साज-सज्जा, साहित्यिक-रचनाओं एवं मुद्रण की दृष्टि से भी पत्रिका प्रशंसनीय है। इस अंक के सभी रचनाकारों को साधुवाद।

इस अंक में प्रकाशित "ओलंपिक में महिलाओं का योगदान" तथा "मानव जीवन में खेल का महत्व" लेख विशेष सराहनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्मिकों की सृजनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में "कावेरी" की भूमिका महत्वपूर्ण है। इसी कामना के साथ समस्त सम्पादकीय मण्डल को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

भवदीय

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी

हिं.अ./हिं.क./2021-22/264
02/11/2021

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2226320
फैक्स/Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/E-mail-agaubihar@cag.gov.in पो० बॉक्स/P.B.No.-47

EE 740284826

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हि०क० / ले० व ह० / पत्रिका समीक्षा / 2021–22 / 154 दिनांक:- 08/12/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले० व ह०) का कार्यालय,
कर्नाटक, बैंगलूरु।

विषय: हिंदी गृह–पत्रिका ' कावेरी ' के 26वें अंक का अग्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह–पत्रिका ' कावेरी ' के 26वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

14 DEC 2021
TAPPAL

हिं.अ./हिं.क./2021-22/280
14/12/2021

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला–171 003 दूरभाष: 0177–2652502 / 2651033, फैक्स: 0177–2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

EI 838537405

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड
'महालेखाकारभवन', कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक26 / हि०प्र० / 2021–22 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 392 दिनांक21.12.2021

सेवा में

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु
पिन - 560001

27 DEC 2021
TAPPAL

विषयः–हिन्दी ई–पत्रिका "कावेरी" के 26 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई–पत्रिका "कावेरी" के 26 वें अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/ हिंदी प्रकोष्ठ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)-1, महाराष्ट्र, मुंबई -400020
Office of the Principal Accountant General (Audit)-I, Maharashtra, Mumbai-400020

सं.रा.अ./ले.प.-1/बा.प/243|290 दिनांक: 24.11.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह) का कार्यालय
कर्नाटक, बैंगलुरु - 560001

विषय – "कावेरी" पत्रिका के 26 वें अंक की प्राप्ति।

आपके कार्यालय से दिनांक 5.11.2021 को प्राप्त **"कावेरी" पत्रिका के 26 वें अंक** की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाकारों की रचनाएँ शिक्षाप्रद, मनोहारी एवं रुचिकर है। श्री उदय प्रताप सिंह **की "नया सवेरा", श्री राहुल शर्मा** की **"सफर"** तथा **श्रीमती सविता** की **"अनोखी प्रश्नावली"** आदि उत्कृष्ट है तथा पत्रिका के मुख्य पृष्ठ की साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका के कुशल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को एवं रचनाकारों को इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

भवदीय

24/11/21

हिन्दी अधिकारी

हिं.अ./हिं.क./2021-22/361
04/02/2022

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड,
राँची

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2021-22/445 दिनांक- 15.11.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी/मा.सं.वि.
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
कर्नाटक, बैंगलूरु - 560 001

विषय- वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका "कावेरी" के छब्बीसवें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका **"कावेरी"** के **छब्बीसवें (26वें) अंक** की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित "नया सवेरा", "हिंदी जगत के महान साहित्यकार कमलेश्वर", "किस्सा - ए - जिंदगी" एवं "कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले सामान्य वाक्यांश" आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

18 NOV 2021
तपाल/TAPPAL
O/o. Pr. Accountant General (A & E)
Karnataka, Main Building, Bengaluru

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निज़ाम पैलेस,
बोस रोड .सी.जे.ए 4/234, कोलकाता020 700-
फोनः ,13/12/4111/2289-033फैक्सः 4060-2289-033
ई मेलः-bresdkolkata@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

30 MAR 2022

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/103 **दिनांकः-10.12.2021**

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वी.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.) का कार्यालय,
कर्नाटक, बेंगलूरु-560 001

विषयः- हिंदी ई-पत्रिका "कावेरी" के 26 वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "कावेरी" के 26 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर सुश्री शिवप्रिया बी. जी का आलेख '**कोरोना महामारी**', सुश्री डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी जी का आलेख '**हिन्दी जगत के महान साहित्यकार-कमलेश्वर**', श्री हिमांशु पटेल जी का आलेख '**अपनी जिम्मेदारी**', श्री हिमांशु पटेल जी की कविता '**मेरा देश मेरी माँ**', सुश्री एम.एस. सुकन्या जी के चुटकुले '**चुटकुले**' और सुश्री डॉ. प्रियंका बी. गोस्वामी जी का आलेख '**कोविड से उत्पन्न तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य**' अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कावेरी" इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

06 APR 2022
तपाल/TAPPAL
Office of Accountant General (A & E)
Karnataka, Annexe Building, Bengaluru

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021/144 दिनांक- 27.12.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा. सं. वि.),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,कर्नाटक,
बेंगलूरू - 560001
ईमेल- agaekarnataka@cag.gov.in

02 FEB 2022
तपाल/TAPPAL

विषय- हिंदी गृह ई-पत्रिका **"कावेरी"** के **26वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह ई-पत्रिका **"कावेरी"** का **26वाँ** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर श्री **शिवांकु चतुर्वेदी** , द्वारा रचित काव्य **'हीररांझा'** और **'किस्सा-ए-जिन्दगी'** अच्छी लगी। **निशा कुमारी** द्वारा रचित लेख **'ओलंपिक में महिलाओं का योगदान'** प्रेरणादायक हैं। इसके अलावा श्री **राहुल शर्मा**, द्वारा रचित कविता **'सफर'** से हमारी बचपन की यादें ताजी हो गई।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 14.12.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (मा.सं.वि.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
संदर्भ:- सं. प्र.म.ले.(ले. व ह./हि.क./2021-22/हि.गृ.पत्रि.कावेरी/124 दिनांक:05.11.2021

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका **"कावेरी"** का 26वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट – मांडर, जीरो प्वाइंट, रायपुर – 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 2582082 • फैक्स/Fax : 2582505 • ई-मेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/ 52 दिनांक:- 16 /11/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा. सं. वि.)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, कर्नाटक
बेंगलुरु- 560001.

विषयः हिंदी गृह पत्रिका "कावेरी" के 26वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका "कावेरी" के 26वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उतम लगीं वो हैं- हीररांक्षा, भारत का गर्व- नीरज चोपड़ा, ओलंपिक में महिलाओं का योगदान, हिन्दी जगत के महान साहित्यकार कमलेश्वर आदि ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोतर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

22 NOV 2021
ಟಪಾಲ್/तपाल/TAPPAL
O/o. Pr. Accountant General (A & E)
Karnataka, Main Building, Bengaluru

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail:agauwestbengal2@cag.gov.in

---

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/२२५
दिनांक: २२ .11.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी
प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बैंगलूरु

विषय : हिन्दी गृह पत्रिका "कावेरी" के 26वें अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

पत्र क्रमांक:प्र.म.ले.(ले.व.ह.)/हि.क./2021-22/हि.गृ.पत्रि.कावेरी/124, दिनांक:05.11.2021 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "कावेरी" के 26वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठणीय एवं प्रेरणादायक है। आपका कार्यालय के "ग" क्षेत्र में होते हुए भी हिन्दी के प्रति सहभागिता अत्यंत ही सराहनीय है। एक अनुरोध है कि हमारे कार्यालय द्वारा भेजे गये पावती को पत्रिका के अगले अंक के "आपके पत्र वाले पृष्ठ" में जरूर शामिल करें।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हस्ता/-

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2021-22/201
दिनांकः 11.11.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखाधिकारी (मा.सं.वि.),
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय,
कर्नाटक, बेंगलूरू-560 001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'कावेरी' के 26वें अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके पत्र सं. प्र.म.ले. (ले. व हक.)/हि.क./2021-22/हिं.गृ.पत्रि.कावेरी/124 दिनांक 05.11.2021 द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका 'कावेरी' के 26वें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय हैं। 'कोरोना महामारी', 'हिंदी जगत के महान साहित्यकार कमलेश्वर', 'भारत का गर्व-नीरज चोपड़ा', 'ओलंपिक में महिलाओं का योगदान', 'ग्लोबल वार्मिंग' तथा 'मानव जीवन में खेल का महत्व' आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायक हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता एवं अविरल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2660704, 2615377 फैक्स: 0172-2610488, 2607732 ई-मेल: agauharyana@cag.gov.in D:\Hindi CellNet_Hindicell_DDJ_Mangal.doc

---

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सं प्रनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/137 दिनांक:07.12.2021

सेवा में ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी ,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
कर्नाटक,
बेंगलूरु- 560 001

विषय :कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका "**कावेरी**" के के 26 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "**कावेरी**" के के 26 वां अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। उसका बाहरी रंग रूप ही नही, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है । सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है ।श्रीमती शिवप्रिया बी.कृत "**कोरोना महामारी**"ज्ञानवर्धक, श्री डॉ. प्रियांका बी. गोस्वामी कृत "**हिन्दी जगत के महान साहित्यकार कमलेश्वर** "रूचिपूर्ण,एवं श्री संदीप कृत "**भारत का गर्व- नीरज चोपड़ा**" प्रेरक हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडलबधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

13 DEC 2021
ಟಪಾಲ್/तपाल/TAPPAL

परीक्षा भवन, 361, अण्णा सालै, तेनामपेट, चेन्नै - 600 018. "LEKHA PARIKSHA BHAVAN", 361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI - 600 018.

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचना का प्रकार	रचनाकार	पृ. सं.
01.	वो माँ है	कविता	शिवांकु चतुर्वेदी	1
02.	एक ईमानदार किसान	कहानी	तरुण सुपुत्र संजय कुमार	3
03.	एक भारत	कविता	हिमांशु पटेल	5
04.	राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रदर्शन	लेख	निशा कुमारी	6
05.	मेरी पारिवारिक यात्रा	यात्रावृतांत	संदीप	8
06.	किताब	कविता	शिवांकु चतुर्वेदी	13
07.	हिंदी भाषा का भविष्य	लेख	राहुल शर्मा	17
08.	माँ	कविता	वी.सुधा	19
09.	प्रकृति	कविता	वी.सुधा	20
10.	हँसी के फव्वारे	चुटकुले	पूजा गुप्ता	23
11.	साइबर अपराध	लेख	आर.पद्मावती	24
12.	नीड़	लेख	शिखा गोयनका	27
13.	जीवन	कविता	आरुषि (सुपुत्री प्रदीप यादव)	31
14.	उपयोगी	कहानी	अभिषेक कुमार	33
15.	मेरे पापा	कविता	तरुण (सुपुत्र संजय कुमार)	34
16.	मेरी अमृतसर यात्रा	यात्रा वृतांत	टी.बी.अशोक	35
17.	मेरा स्कूल	कविता	प्रांजल (सुपुत्र प्रदीप यादव)	39
18.	फ़ौजी की छुट्टी	कविता	शिवांकु चतुर्वेदी	40
19.	ज़िंदगी	कविता	अलकनंदा सिंह (सुपुत्री चंद्रमनी आज़ाद)	44
20.	जागृति	कविता	रवि भूषण	45
21.	जल ही जीवन है	लेख	निशा कुमारी	46
22.	माँ	लेख	संदीप	54
23.	बचपन	कविता	खुशबू कुमारी	57
24.	पी.वी.सिंधु	लेख	तिलकशांति	58

कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत को फूलों का गुलदस्ता भेंट करती महालेखाकार महोदया

कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत के साथ बैठक में सम्मिलित कार्यालय के पदाधिकारी

कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत के साथ बैठक के दौरान चर्चा करती हुई महालेखाकार महोदया

कर्नाटक के राज्यपाल श्री थावरचंद गहलोत से भेंट के दौरान महालेखाकार महोदया, उप महालेखाकार महोदय एवं कार्यालय के पदाधिकारी

शिवांकु चतुर्वेदी
लिपिक

वो माँ है

हो ज़रा खामोश तो चुप्पी भी समझती है
कर दो कभी आवाज ऊँची तो गुस्सा भी सहती है
समझती है नादानियाँ और जानती है गलतियाँ मेरी
फिर भी मेरी हाँ के हाँ में बहती है
वो माँ है बिना समझाए सब समझती है ॥

याद है मुझे ... याद है मुझे संघर्ष उनके,
लाख दुखों के बाद भी सामने से हँसती है
वो माँ है मुझसे कहाँ कुछ कहती है ॥

मैं मशगूल रहता दुनियादारी में खोया रहता खुद से ही यारी में
और वो फिक्र में मेरी दिन रात रहती है ।
कितनी दफा ना जाने उसे अनदेखा किया
वक़्त अपना, उसे सबसे कम दिया
फिर भी वो हर वक़्त गुफ्तगू के इंतजार में होती है
वो माँ है बिना समझाए सब समझती है ॥

गरम हथेलियाँ मेरी...
गरम हथेलियाँ मेरी जब उसे महसूस होती है
मायूस चेहरे के साथ अंदर ही अंदर रोती है
देखो ना माँ ऐसी भी होती है ॥

हर कोई तरक्की पूछे, जाने ना कोई हाल मेरा
बस एक माँ ही है जो हाल चाल पूछती है
वो माँ है बस प्यार की उम्मीद रखती है ॥

रह भी जाऊँ अगर मैं पीछे, किसी रेस में
फिर भी हौंसला देती है
कितनी भी हो मुश्किल घबराना नहीं है
हर बार यही बात कहती है ॥

वो माँ है,
भरोसा करती है
भरोसा करती है और सारा जहाँ जीतने को कहती है ॥

****

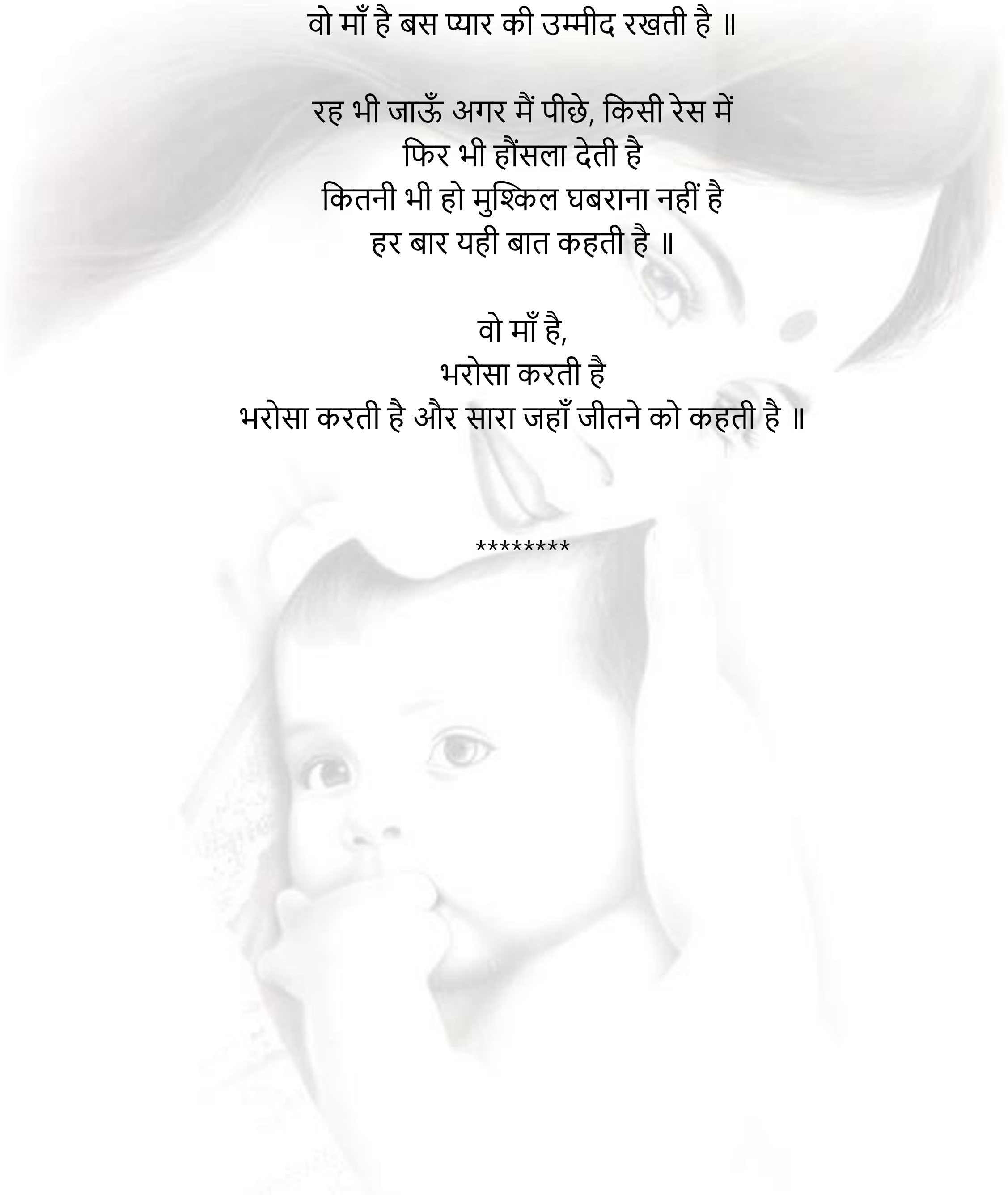

तरूण
(सुपुत्र श्री संजय कुमार)

एक ईमानदार किसान

किसी गांव में एक गरीब किसान रहता था । वह बहुत ही ईमानदार और मेहनती था । वह अपने खेत में काम करता और खुशी से रहता था। पूरे गांव में उसकी ईमानदारी के चर्चे थे। उसका एक दोस्त था जो उसी गांव के राजा के यहाँ सिपाही का काम करता था । वह किसान से उसके घर रोज मिलने आता था । एक बार राजा ने अपने दरबार में ऐलान किया कि उसके बगीचे में काम करने हेतु एक माली चाहिए जो कि पेड़-पौधों और फूलों का ध्यान रख सके । राजा का ऐलान सुनकर सिपाही ने सोचा कि किसान से मित्रता निभाने का यही मौका है। मैं उसे यहाँ बगीचे में काम पर लगवा दूँगा और हम दोनों साथ भी रह लेंगें और किसान का भला हो जाएगा । यह सोचकर उसने राजा से कहा कि, "महाराज, मैं आपके लिए ऐसे आदमी को लेकर आऊंगा जो यह काम अच्छे से करेगा" । तभी राजा ने उस सिपाही को आदेश दिया कि उसे कल से ही बगीचे में काम करने के लिए कह देना।

उसी वक्त वह सिपाही अपने दोस्त किसान के पास पहुँच गया और किसान को बगीचे में काम करने की सारी बात बता दी और किसान ने भी काम करने के लिए खुशी-खुशी हाँ कर दी और अगले ही दिन अपने दोस्त के साथ राजमहल पहुँच गया। सिपाही उसे लेकर राजा के पास गया और राजा ने उस किसान को बगीचे की पूरी देखभाल का काम सौंप दिया और कहा कि "अगर तुम पूरी ईमानदारी के साथ काम करोगे तो तुम्हें 50 सोने की मुद्राएं हर महीने दी जाएगी" । किसान ने खुशी-खुशी हाँ कर दी और उसी समय बगीचे में काम करना शुरू भी कर दिया । किसान बगीचे में बहुत दिल लगा कर काम करता। कुछ ही दिनों में उसने बगीचे को हरा-भरा व सुंदर बना दिया । राजा को उसका काम बहुत पसंद आया । एक दिन किसान को बगीचे में खुदाई के दौरान जमीन के नीचे कुछ महसूस हुआ तो उसने वहाँ और खुदाई की तो देखा कि वहाँ नीचे एक बड़ी सी संदूक थी । किसान ने संदूक बाहर निकाली और खोल कर देखा तो वह सोने और चाँदी के आभूषणों से भरी हुई थी ।

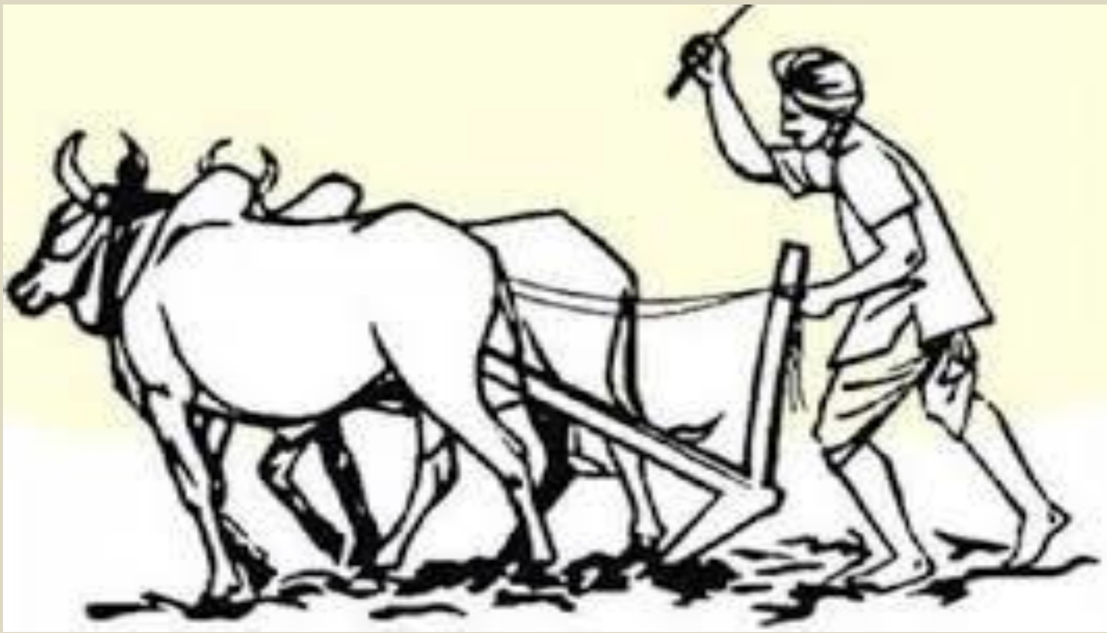

यह देखकर किसान बहुत खुश हुआ और अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए वह राजा के पास पहुँचा और राजा को सारी बात बता दी । राजा किसान की ईमानदारी देखकर बहुत खुश हुआ और उसके साथ गया, जहाँ से उसने संदूक निकाली थी । राजा ने देखा तो सोचने लगा कि हम कई वर्षों से इसे ही खोज रहे थे । राजा बहुत खुश हुआ और अगले ही दिन उसने किसान से पूछा कि बोलो, “तुम्हें क्या ईनाम चाहिए”? किसान बोला, “मालिक, मुझे कुछ नहीं चाहिए । मेरे पास जो भी है, मैं उसी से खुश हूं । राजा उसकी बात सुनकर अति प्रसन्न हुआ और उसने किसान को अपना मंत्री बनाने का फैसला लिया और कहा ये “मेरा हुक्म भी है” । किसान ने राजा की बात मान ली और राजा का मंत्री बन गया ।

ईमानदारी ही सबसे बड़ी है जिसने एक गरीब किसान को मंत्री पद दिला दिया ।

****

हिमांशु पटेल
डी.ई.ओ.

एक भारत

श्रीराम भूमि भारत अखण्ड, क्या खण्ड कभी हो सकता है?

है नाम पड़ा भारत अपना, सदियों से चलता आता है।

झुकती दुनिया जिसके आगे, निज मस्तक झुकता जाता है,

अनादि काल से चलता आया, भारत सनातन कहलाता है।

जन्मी सारी शिक्षाएँ जहाँ, ज्ञान का कोई तोड़ नहीं,

था गणित फेल हो जाता, जहां विज्ञान का कोई जोर नहीं।

था भारत अपना पहले से, इन सबमें अनमोल कहीं,

कण-कण में बसता देश प्रेम का, सबके दिल में मोल यहीं।

है विश्व में भारत एकमात्र देश, जिसने ज्ञान को अपने साधा है,

सदियों से बहती गंगा को, अपने आँचल से बांधा है।

उत्तर-पश्चिम – दक्षिण-पूर्व, है सब धर्मों का मेल जहाँ,

भाषा-व्यजंन सब जुदा-जुदा, पर दिल सबके है एक यहाँ।

परोपकार की परिभाषा है, त्याग का अपना मान जहाँ,

धर्म-जाति से परे भारत को खूब मिला सम्मान यहाँ।

****

निशा कुमारी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रदर्शन

राष्ट्रमंडल खेल 2022 का आयोजन बर्मिंघम, इंग्लैंड में 28 जुलाई से 8 अगस्त तक किया गया। भारत ने पहली बार वर्ष 1934 में इन खेलों में भाग लिया था। तब से भारत हर बार खेलों के इस महाकुंभ में हिस्सा लेता आया है। भारत ने अपने 88 वर्षों के इतिहास में अब तक कुल 503 मेडल जीते हैं। इस बार कुछ खेलों में भारत का प्रदर्शन कमाल का रहा, वहीं कुछ खेलों में निराशा हाथ लगी और कई खेलों में मामूली अंतर से स्वर्ण से चूक गए।

भारत के 210 सदस्यीय दल ने 22 स्वर्ण, 16 रजत और 23 कांस्य समेत बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेल में 61 पदक जीते और चौथे स्थान पर रहा जिनमें एथलेटिक्स, क्रिकेट, हॉकी, मुक्केबाज़ी, कुश्ती आदि खेलों के पदक शामिल हैं। महिला क्रिकेट को पहली बार राष्ट्रमंडल खेलों में शामिल किया गया। पहले ही संस्करण में भारत ने क्रिकेट में रजत पदक जीता। वहीं, ऑस्ट्रेलिया को स्वर्ण पदक मिला। हरमनप्रीत कौर ने महिला क्रिकेट टीम का नेतृत्व किया। निशानेबाजी और तीरंदाज़ी को बर्मिंघम खेलों में शामिल नहीं किया गया था। इसके बावजूद भारत 61 पदक जीतने में सफल रहा। भारत के पुरुष खिलाड़ियों ने 13 स्वर्ण सहित 35 पदक जबकि महिला खिलाड़ियों ने 8 स्वर्ण सहित 23 पदक भारत को दिलाए। देश ने सर्वाधिक पदक कुश्ती और वेटलिफ्टिंग की अलग-अलग कैटेगरी में हासिल किए। भारत ने कुश्ती में 12 और वेटलिफ्टिंग में 10 पदक अपने नाम किए। इसके अलावा टेबल टेनिस में चार तथा वेटलिफ्टिंग, मुक्केबाजी और बैडमिंटन में तीन-तीन स्वर्ण पदक हासिल किए। इस बार वेटलिफ्टिंग में संकेत सरगर ने पहला पदक दिलाया था।

2022 में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का पाँचवा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है। इससे पहले 2010 में दिल्ली में आयोजित हुए राष्ट्रमंडल खेलों में भी भारत का प्रदर्शन शानदार रहा। तब भारत ने 38 स्वर्ण पदक सहित कुल 101 पदक जीते थे और पदक तालिका में दूसरे स्थान पर रहा था । भारत ने 2018 में गोल्ड कोस्ट में 26 स्वर्ण सहित 66 पदक जीतकर तालिका में तीसरा स्थान हासिल किया था। लेकिन इस बार वह उस आंकड़े को पार नहीं कर पाया। हॉकी में रजत पदक के साथ भारत का सफर खत्म हुआ है। ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और कनाडा के बाद भारत पदक तालिका में चौथे स्थान पर रहा । हालांकि 2018 की तुलना में पदकों की संख्या में कमी रही । इसके बावजूद भारत के लिए ये खेल कई मायनों में खास साबित हुए । भारतीय खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से सभी का दिल जीता और कई ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए देश को यादगार पलों का गवाह भी बनाया। इस बार के राष्ट्रमंडल खेलों में युवा और अनुभव का बेहतरीन तालमेल देखने को मिला । युवा खिलाड़ियों ने अपने पहले प्रयास में पदक जीते, तो वहीं कई पुराने और अनुभवी खिलाड़ियों ने भी पदक जीतने का अपना सपना पूरा किया ।

****

संदीप
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मेरी पारिवारिक यात्रा

अगस्त 2019 में मेरे माता-पिता एवं मामा जी ने बेंगलूरु आने की इच्छा व्यक्त की । यह सुनते ही मेरी खुशी का ठिकाना न रहा क्योंकि मैं ग्रामीण परिवेश से संबंध रखता हूं जहाँ पर लोग बाहर घूमने की बजाए अपने काम को ज्यादा महत्त्व देते हैं । मैंने अपने माता-पिता एवं मामा जी के लिए हवाई जहाज की टिकट बुक कर दी । मेरे माता-पिता को हवाई जहाज़ से यात्रा करवाना मेरी हार्दिक इच्छा थी । मैंने दोपहर तीन बजे की टिकट बुक करवाई ताकि वे लोग हवाई जहाज की खिड़की से बाहर का नजारा देख सके । निर्धारित समय पर सब एयरपोर्ट पहुँच गए । सुरक्षा संबंधी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद सब लोग हवाई जहाज में बैठ गए । किस्मत से सब को खिड़की वाली सीट मिली । वे सब हवाई जहाज से बाहर का नजारा देख कर इतने प्रफुल्लित थे कि मैं मोबाइल पर ही उनकी आवाज सुन कर उनकी खुशी का अंदाजा लगा सकता था । निर्धारित समय पर हवाई जहाज़ ने उड़ान भरी और ढाई घंटे बाद बेंगलूरु एयरपोर्ट पर पहुँच गया । मैंने कैब बुक कर दी थी । सभी लोग रात 9.30 तक मेरे सरकारी आवास पर पहुँच गए थे । मैंने सबके लिए खाना तैयार कर दिया था । सब को प्रणाम कर सबका कुशल-क्षेम पूछा । सब बेंगलूरु के मौसम की बहुत प्रशंसा कर रहे थे क्योंकि अगस्त महीने में यहाँ अच्छी बरसात होती है । सब ने खाना खाया एवं ढेर सारी बातें करने के बाद सब सो गए । मैंने सबके लिए मदुरै, कन्याकुमारी एवं रामेश्वरम घूमने का कार्यक्रम बनाया । मैंने बेंगलूरु से कन्याकुमारी तथा कन्याकुमारी से रामेश्वरम तथा वापसी हेतु मदुरै से बेंगलूरु की ट्रेन की टिकट बुक कर दी । लेकिन शुक्रवार को पता चला की हमारी बेंगलूरु से कन्याकुमारी की ट्रेन टिकट कंफर्म नहीं हुई । इसीलिए मैं एक दोस्त के साथ शांतिनगर बस डिपो गया । वहाँ से मदुरै के लिए बस की टिकट बुक करवाई । निर्धारित समय पर हम बस स्टैंड पहुँच गए और वहाँ से बस द्वारा हम सुबह मदुरै पहुँच गए । वहाँ शौच आदि से निवृत्त होकर हल्का जलपान किया । फिर वहाँ से

कन्याकुमारी के लिए बस पकड़ी । तकरीबन छः-सात घंटे की यात्रा के बाद हम कन्याकुमारी पहुँचे । हालांकि बेंगलूरु की तुलना में वहाँ गर्मी ज्यादा थी लेकिन रास्ते में हरे-भरे पेड़-पौधों, पहाड़ों, खेतों एवं पवन चक्कियों के मनमोहक दृश्यों ने थोड़ा सुकून दिया ।

कन्याकुमारी बस स्टैंड से हम सभी ऑटो रिक्शा द्वारा समुद्र किनारे तक गए । वहां हमने अपना सारा सामान एक दुकान पर रखा एवं नाव की टिकटें खरीदी ताकि विवेकानंद रॉक मेमोरियल तक जा सके । कन्याकुमारी तमिलनाडु का एक तटीय शहर है । यह भारतीय उप महाद्वीप का दक्षिणत्तम क्षेत्र है जहां अरब सागर, हिंद महासागर एवं बंगाल की खाड़ी मिलते हैं । विवेकानंद रॉक मेमॉरियल का उद्घाटन 2 सितंबर 1970 को तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी.गिरी ने किया था । यह इसीलिए भी प्रसिद्ध है क्योंकि 24 सितंबर 1892 को जब स्वामी विवेकानंद कन्याकुमारी पहुँचे तो वे समुद्र में तैरकर गए तथा एक बड़ी चट्टान पर बैठ गए एवं भारत के भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य के लिए चिंतन करने लगे ।

वहाँ से समुद्र का मनोरम दृश्य आसानी से देखा जा सकता है । जहाँ तक नजरें पहुँची, पानी ही पानी था । समुद्र की लहरें चट्टान से टकरा कर शांत हो रही थी तथा कुछ पानी की फुहारे हमें स्पर्श करके बारिश का अहसास करवा रही थी । तकरीबन एक दो घंटे समुद्र के मनमोहक दृश्यों को निहारते हुए हम नाव द्वारा वापस तट पर आ गए । गाड़ी बुक करके हम कन्याकुमारी बीच पर गए जहाँ से सूर्यास्त का अद्भुत नजारा दिखाई देता है लेकिन दुर्भाग्यवश उस दिन सूर्यास्त के समय बरसात होने लगी इसीलिए हमें वापस आना पड़ा चूंकि हमारी रेलगाड़ी शाम को थी इसीलिए हम कैब बुक करके कन्याकुमारी रेलवे स्टेशन पहुँच गए । स्टेशन के पीछे ज्यादा बड़ा बाजार तो नहीं था लेकिन खाने के लिए होटल तो मिल ही गया । रात को निर्धारित समय पर ट्रेन रामेश्वरम के लिए रवाना हो गई । सब ने अपनी-अपनी सीट ढूँढी और लेट गए ।

सभी थके हुए थे इसीलिए लेटते ही सो गए । सुबह पानी की कुछ बूंदे मुंह पर पड़ी तब जाकर आँख खुली । चारों तरफ देखा तो पानी ही पानी था और हमारी ट्रेन पानी के ऊपर बने पुल के ऊपर पटरियों पर चल रही थी । पूछने पर पता चला कि यह पंबन ब्रिज था जो कि भारत का दूसरा सबसे बड़ा (2 कि.मी.) रेलवे ब्रिज है जिसका निर्माण अँग्रेज़ों द्वारा 1913 में किया गया था । पंबन ब्रिज रामेश्वरम द्वीप को मुख्य भूमि से जोड़ता है । खिड़की से बाहर झाँक कर देखा तो एक और पुल था जिस पर कार, बस, मोटरसाईकिल आदि चल रहे थे । ट्रेन की गति बहुत ही धीमी थी लेकिन यह एक रोमांचक अनुभव था । सुबह 6 बजे के करीब हम रामेश्वरम रेलवे स्टेशन पहुँचे । स्टेशन से बाहर निकलते ही बहुत सारे ऑटो रिक्शा खड़े थे । एक ऑटो रिक्शा में बैठकर हम मंदिर पहुँच गए ।

वहाँ पहुँच कर हमने स्नान आदि किया तथा एक दुकान के लॉकर में अपना सारा सामान रख दिया । मंदिर में मोबाइल ले जाने की अनुमति नहीं थी इसीलिए हमने मोबाइल भी लॉकर में रख दिए । फिर हमने मंदिर में प्रवेश किया । चारों तरफ भक्तिमय माहौल था । वैसे तो मंदिर के अंदर कोई ड्रेस कोड नहीं था फिर भी हमें ऐसे पवित्र स्थान पर तंग एवं भड़कीली पोशाक पहनने से बचना चाहिए । मंदिर के परिसर में 22 कुंड है जिन्हें 22 तीर्थों के नाम से जाना जाता है । इनमें स्नान करना पवित्र माना जाता है लेकिन गीले कपड़े पहन कर मंदिर में प्रवेश करना वर्जित है । यह मंदिर रामनाथस्वामी मंदिर के नाम से जाना जाता है । यह भारत में भगवान शिव के 12 (बारह) ज्योतिर्लिंगों में से एक है । यह भारत का सबसे दक्षिणत्तम ज्योतिर्लिंग है इसीलिए यह बात भी इसे विशेष बनाती है । भारत में स्थित हिंदू मंदिरों में सबसे बड़ा गलियारा इसी मंदिर का है । इसका निर्माण राजा मथुरामलिंगा सेतुपति द्वारा करवाया गया था । तकरीबन 2-3 घंटे पंक्ति में खड़े होने के बाद हमारी बारी आ गई तथा हम मंदिर में दर्शन कर बाहर आ गए । दुकान से सामान एकत्रित किया । मंदिर से थोड़ी सी दूरी पर ही अग्नि तीर्थ है । वहां स्नान करना पवित्र माना जाता है । सभी ने वहाँ स्नान किया एवं भगवान की पूजा अर्चना की । फिर हमने एक कैब बुक कर ली ताकि रामेश्वरम में स्थित सभी मंदिरों के दर्शन कर सके । कैब वाले ने हमें लक्ष्मण तीर्थ, गंधामधाना पर्वत, पंचमुखी हनुमान मंदिर, जादा तीर्थ मंदिर, कोथास्वामी मंदिर एवं भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम आजाद के घर के दर्शन करवाए लेकिन समय कम होने के कारण उस दिन हम धनुषकोड़ी नहीं जा सके इसलिए हम कैब द्वारा रेलवे स्टेशन आ गए तथा रेल द्वारा पंबन ब्रिज के रोमांचक सफर का फिर से आनंद लिया तथा देर रात मदुरै पहुँच गए । वहां एक होटल में दो कमरे बुक किये हुए थे, सबने खाना खाया और जल्दी ही सो गए क्योंकि सभी थके हुए थे । सब लोग सवेरे जल्दी उठे क्योंकि हमें मीनाक्षी

मंदिर में दर्शन के लिए जाना था । सबने स्नान कर सारा सामान पैक किया तथा कैब द्वारा मंदिर पहुँच गए । बाहर एक दुकान से पूजा सामग्री ली तथा उसी दुकान पर सामान रख दिया । मंदिर के अंदर मोबाइल आदि ले जाना वर्जित है इसीलिए हमने मोबाइल भी सामान के साथ ही रख दिए । इस मंदिर के सभी प्रवेश द्वार एक जैसे लगते है । मीनाक्षी मंदिर तमिलनाडु राज्य के मदुरै नगर में स्थित एक ऐतिहासिक मंदिर है ।

यह मंदिर हिंदू देवता शिव (सुंदरेश्वर या सुंदर के रूप में) एवं उनकी भार्या देवी पार्वती (मीनाक्षी या मछली के आकार की आँख वाली देवी के रूप में) दोनों को समर्पित है । यह मंदिर तमिल भाषा के गृहस्थान 2500 वर्ष पुराने मदुरै नगर की जीवनरेखा है । हिंदू पौराणिक कथानुसार भगवान शिव सुंदरेश्वर रूप में अपने गणों के साथ मांडय राजा मलध्वज राजकुमारी मीनाक्षी से विवाह रचाने हेतु मदुरै नगर में आए थे । मीनाक्षी को देवी पार्वती का अवतार माना जाता है । इस मंदिर को देवी पार्वती के सर्वाधिक पवित्र स्थानों में से एक माना जाता है । इस मंदिर का स्थापत्य एवं वास्तुकला आश्चर्यचकित कर देने वाली है । इस इमारत

समूह में 12 भव्य गोपुरम है जो अति विस्तृत रूप से शिल्पित है । इन पर बड़ी महीनता एवं कुशलतापूर्वक रंग एवं चित्रकारी की गई है जो देखते ही बनती है ।

मंदिर के अंदर मन को असीम शांति मिलती है । सुबह ज्यादा भीड़ नहीं होती है । इसीलिए दर्शन के लिए हमारी बारी एक-दो घंटों में ही आ गई । हम दर्शन करके बाहर आए । दुकान से अपना सामान एकत्रित किया एवं बाहर से मंदिर की अनेक फोटो खिचीं और रेलवे स्टेशन की तरफ रवाना हुए । मंदिर से रेलवे स्टेशन की दूरी थोड़ी ही थी और हमारी रेलगाड़ी का समय भी होने वाला था । ऑटो रिक्शा द्वारा हम पांच मिनट में ही रेलवे स्टेशन पहुंच गए । रेलवे स्टेशन के बाहर कई होटल थे । वहाँ हमने खाना खाया । थोड़ी देर बाद हमारी ट्रेन भी आ गई । रेलवे स्टेशन बहुत ही साफ-सुथरा था । थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कूड़ेदान रखे हुए थे एवं लोग उनमें ही कूड़ा डाल रहे थे । हमने ट्रेन में प्रवेश किया तथा आरक्षित सीटों पर लेट गए । शाम के समय हम कृष्णराजपुरम रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए । वहां से कैब बुक करके हम अपने सरकारी आवास पर पहुँच गए । खाना खा-पीकर सब सो गए क्योंकि सभी काफी थके हुए थे । अगले दिन मैं अपने कार्यालय चला गया, बाकी सब ने आराम किया । अगले कुछ दिनों तक उन्होनें बेंगलूरु के भी कई प्रसिध्द स्थलों का भ्रमण किया । मेरे माता-पिता एवं मामा जी के लिए यह एक अविस्मरणीय अनुभव था क्योंकि वे लोग पहली बार दक्षिण भारत आए थे । हवाई-जहाज की यात्रा, कन्याकुमारी का समुद्र तट एवं हरियाली, पवनचक्की, पहाड़-पर्वत, पंबन ब्रिज एवं अनेक धार्मिक स्थलों ने इस यात्रा को सुखद एवं पावन बना दिया ।

****

शिवांकु चतुर्वेदी
लिपिक

किताब

कभी एक शाम मैं अपनी किताब यानी डायरी से पूछता हूँ ,
वैसे सारी बात मैं उससे कहता हूँ
घर में सबसे छोटे होना और साथ में जिम्मेदारियों का भी होना..
क्या ये संयोग मुझे काबिल बनाने आया या
ज़िंदगी की एक अनकही कहानी कहने आया ?

यकीनन प्यार मुझे बेहिसाब मिला
पर अपने निर्वाह से हार जाने का डर उससे भी बुरा
ये जो घर के छोटे होते है... क्या सब ऐसे ही होते है ??

एक ओर अपनी ज़िंदगी समेटे एक ओर कांधे सारे बोझ झेले...
गिरते पड़ते हर मिसात में मुस्कुराते
नाकामी में नालायक कहलाते
बस खुद ही खुद का दिल सहलाते
ए किताब सुन ना ... क्या तू कह पाएगी वो सब ?
जो छोटे कभी कह नहीं पाते...

अकेले इस अजनबी दुनिया के किसी कोने मे पड़े,
जो कभी घर से दूर रह नहीं पाते
क्यूँ खामोशियों से इन्हें प्यार होता, क्यूँ दिल बस अंदर से रोता ??
बता ना... तू कह पाएगी किस्से उनके ??
जो अपनी इच्छा से बह नहीं पाते....

सपने अनेकों....
सपने अनेकों उनकी गठरी मे, छोड़ वो सारे , चलते रहते जिम्मेदारी की कश्ती में
और तब ये ज़िंदगी का समंदर ज्वार लाता...
कई सपने उजाड़ जाता
ए किताब तू बताएगी क्या ??
आखिर किस के लिए वो ये सब सह जाते ?

पन्ने कम पड़े शायद ओ-किताब, छोटो को बयां करने में,
इतने किस्से जो है उनके हिस्से मेँ
कुछ मैं लिख कर जाता हूँ कुछ तुम ख़ुद से सुनाना
कैसे छोटे कम उम्र में ही सबसे बड़े हो जाते ...

सबको हँसाते और ख़ुद कभी रो नहीं पाते
प्यारी किताब ....कहना तू ...
दिल उनका भी भरा है, सुकून की आस में खड़ा है ।

बात छोटी सी है, ये छोटे है ना...
अपनों को जता नहीं पाते
औरों को कुछ बता नहीं पाते.....

****

हिंदी कार्यशाला के दौरान लेखन अभ्यास करते कार्यालय के पदाधिकारी

तिमाही हिन्दी कार्यशाला के दौरान व्याख्यान देते प्रवक्ता

राहुल शर्मा
लेखाकार

हिंदी भाषा का भविष्य

एक भाषा जिसने हम सबको एक सूत्र में बाँध रखा है उस भाषा का नाम 'हिंदी' है । हिदीं भारत के लगभग 52.8 करोड़ लोगों की मातृभाषा है जबकि 13.9 करोड़ लोग द्वितीय भाषा और 2.4 करोड़ लोग तृतीय भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं । यानी जो संवाद हम हिंदी में करते हैं वह करीब 69 करोड़ भारतीयों तक सीधा पहुँचता है । इतना ही नहीं दुनिया के करीब 250 देशों में हिंदी भाषी लोग रहते हैं ।

हिंदी दुनिया की ताकतवर भाषाओं में शामिल है और इसे बोलने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है । लेकिन क्या आपको पता है कि वर्ष 2050 तक हिंदी दुनिया की सबसे शक्तिशाली भाषाओं में से एक बन जाएगी ?

विश्व आर्थिक मंच ने पावर लेंग्वेज इंडेक्स में हिंदी को टॉप 10 में शामिल किया है । इस सूची में वे भाषाएँ शामिल हैं जो वर्ष 2050 तक दुनिया की सबसे शक्तिशाली भाषाएँ होंगी । अर्थव्यवस्था में सशक्त भूमिका निभाने के मामले में हिंदी 16वें स्थान पर, क्षेत्रफल के हिसाब से 13वें स्थान पर, संचार के मामले में 8वें स्थान पर और कूटनीतिक मामलों में 10वें स्थान पर है ।

भारत ने पाँच हजार वर्ष के इतिहास में कभी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया और न किसी दूसरे देश पर कब्जा कर अपने उपनिवेश स्थापित किए, फिर भी हिंदी देश-दुनिया में लोकप्रिय भाषा के रूप में उभर रही है ।

प्रत्येक वर्ष 14 सितबंर को हिंदी दिवस मनाया जाता है । इस दिन वर्ष 1949 में संविधान सभा ने हिंदी को आधिकारिक भाषा के तौर पर शामिल किया था ।

राजभाषा वह भाषा होती है जिसमें सरकारी कामकाज किया जाता है और राजभाषा का मतलब राष्ट्रभाषा नहीं होता । हालांकि हिंदी राष्ट्रभाषा बनने की प्रबल दावेदार है और इसको लेकर कई तरह के आंदोलन होते रहे हैं ।

वर्तमान में हिंदी भारत के करीब 43 प्रतिशत लोगों की मातृ-भाषा है। हिंदी दुनियाभर में बोली जाने वाली चौथी सबसे बड़ी भाषा है । हिंदी दुनिया की उन गिनी-चुनी भाषाओं में से एक है जिसमें जो लिखा जाता है वहीं बोला भी जाता है । हिंदी भाषा में एक भी शब्द ऐसा नहीं है जिसका उच्चारण उसके लिखने से भिन्न हो, इसी वजह से अंग्रेजों ने हिंदी को सर्वश्रेष्ठ फोनेटिक भाषा भी कहा था । अमेरिका के 45 विश्वविद्यालयों सहित विश्व के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है । वैसे हिंदी सिर्फ भारत की राजभाषा नहीं है बल्कि फिजी देश की आधिकारिक भाषा भी हिंदी है जिसे स्थानीय लोग फिजी हिंदी कहते हैं ।

आज के दौर में अंग्रेजी को सफलता की गारंटी माना जाता है क्योंकि अंग्रेजी को सम्मान की नजर से देखा जाता है । आज अगर आप अंग्रेजी बोलते हैं तो आपको प्रथम श्रेणी का नागरिक माना जाएगा लेकिन अगर आप हिंदी भाषा या अन्य स्थानीय भाषा बोलते हैं तो आपको द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझा जाता है ।

कई लोग हमेशा यह तर्क देते हैं कि अंग्रेजी ज्ञान-विज्ञान और विकास की भाषा है जबकि रूस, जर्मनी, जापान और चीन जैस कई देशों ने अपनी मातृभाषा को अपनाकर यह साबित कर दिया है कि मातृभाषा के दम पर भी देश तरक्की कर सकता है ।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' के शब्दों में -

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञाने के, मिटे न हिये के सूल"

****

वी.सुधा
स.ले.अ.

माँ

माँ है प्रकृति की एक महान कृति

देती है नव जीव को आकृति

करना रोज उनका सम्मान

कभी न करना उनका अपमान

माँ होती है हमारी पहली गुरु

पहला पाठ होता उनसे शुरू

उनकी बात है सबसे प्यारी

परिवार में है सबसे न्यारी

कर रही हूँ अपने विचार आपसे शेयर

करना उनकी प्रतिदिन केयर

****

वी.सुधा
स.ले.अ.

प्रकृति

प्रकृति होती है अति सुंदर,
ढेर सारी खुशियों का मंदिर ।
बागों में जब बहार आने लगे,
पेड़ और फूल मुस्कुराने लगे ।

पुष्प मधु से भर जाने लगे,
तितलियाँ उन पर मँडराने लगे ।
प्रकृति से हमें इतना सब मिलता है,
क्या उस पर अधिकार हमारा है ।

खत्म हो जाएगा सब कुछ एक दिन,
तब आएगी याद ये बर्बादी प्रतिदिन ।
मिलकर करे उपयोग यहाँ पर,
रखे प्रकृति को हरा भरा धरती पर।

****

राष्ट्रीय एकता दिवस 2022

राष्ट्रीय एकता दिवस 2022 के दौरान शपथ ग्रहण करती हुई महालेखाकार महोदया एवं वरिष्ठ अधिकारीगण

राष्ट्रीय एकता दिवस 2022

राष्ट्रीय एकता दिवस 2022 के दौरान कार्यालय परिसर में शपथ ग्रहण करते हुए कार्यालय के पदाधिकारी

पूजा गुप्ता
लेखाकार

हँसी के फव्वारे

1. बीबी - चलो ना आज कहीं घूमने चलते हैं और हाँ ड्राइविंग मैं करूंगी ।

   पति - अच्छा....मतलब जाएंगे अपनी कार में, और आएंगे कल के अख़बार में ।

2. हमारे देश में केवल एक आदमी ऐसा है जो छुट्टे के लिए अकेला लड़ रहा है ।

   वो है............. बस कंडक्टर ।

3. कल्लू- इस दुनिया की सबसे प्यारी जोड़ी कौन सी है ?

   पप्पू- चप्पल ।

   कल्लू- वो कैसे ?

   पप्पू- अगर एक खो जाए तो दूसरी का जीवन भी खत्म हो जाता है ।

4. दादा (पोते से) - तेरी टीचर आ रही है, जा छुप जा ।

   पोता- पहले आप छुप जाओ दादा जी, क्योंकि आपकी मौत के बहाने मैंने दो हफ़्ते की छुट्टी ले रखी है ।

5. जज - घर में मालिक के रहते हुए तुमने चोरी कैसे की ?

   पप्पू - जज साहब आपकी अच्छी नौकरी है, अच्छी तनख्वाह है, आप ये सीखकर क्या करोगे ?

6. पुरुष जब भी सैलून से लौटता है, नहाता जरूर है ।

   पर मजाल है आज तक किसी भी महिला ने ब्यूटी पार्लर से लौट कर मुंह भी धोया हो ?

आर. पद्मावती
सहायक लेखाधिकारी

साइबर अपराधः वर्गीकरण और प्रभाव

प्रारंभ से ही मनुष्य अभिनव और आविष्कारक प्रवृति का रहा है । विभिन्न आवश्यकताओं ने नए उपकरणों और प्रौद्योगिकियों को जन्म दिया । प्रौद्योगिकी भी काम को आसान बनाने के लिए मनुष्य की ही खोज है । प्रौद्योगिकी में उन्नति एक तरफ उपयोगी है और दूसरी तरफ कुछ हद तक इसके विनाशकारी प्रभाव भी हैं । साइबर अपराध भी इस तकनीकी विकास का एक नकारात्मक पहलू है । व्यक्ति, संगठन और समूह ऐसी आपराधिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में शामिल है ।

साइबर अपराध को इंटरनेट और कम्प्यूटर के अवैध उपयोग के रूप में उल्लिखित किया जा सकता है । आजकल कम्प्यूटर को अपराध के लिए एक हथियार के रूप में उपयोग किया जा रहा है । ये अपराध हमारे दैनिक जीवन का एक आम हिस्सा बन गए हैं । प्रति दिन कोई न कोई व्यक्ति साइबर अपराध का शिकार हो रहा है ।

वर्गीकरणः

- एक व्यक्ति के खिलाफ अपराध
- एक संगठन के खिलाफ अपराध
- सरकार के खिलाफ अपराध

साइबर अपराध के प्रभावः

यदि हम व्यक्तिगत स्तर पर चर्चा करते हैं तो इससे प्रभावित लोग अभी भी नुकसान की भरपाई करने की कोशिश कर रहे हैं । कुछ ने तो आत्महत्या करने तक का विकल्प चुन लिया । पैसे की हानि और कोई भी जानकारी जो गोपनीय है, व्यक्ति को असहाय बना देती है और उसे जीवन की दर्दनाक स्थिति में छोड़ देती है ।

संगठन के स्तर पर, कंपनी की जानकारी को चोरी करने या मैलवेयर द्वारा सिस्टम को नष्ट करने से भारी नुकसान होता है और अपराधियों द्वारा यह कुछ इस तरह से सेट किया जाता है कि यह तब तक काम न करे जब तक कि अपराधी की शर्तें पूरी न हो जाएं । इसकी वजह से कंपनियों को अधिक नुकसान होता है ।

सरकार भी इस अपराध की शिकार है । सरकारी स्तर पर साइबर अपराध के परिणाम के रूप में कई गोपनीय जानकारी लीक हो जाने का खतरा बना रहता है ।

हमारे राष्ट्र भारत ने पहली बार 4 एवं 5 सितंबर 2019 को नई दिल्ली स्थित सी.बी.आई. (केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो) के मुख्यालय में आयोजित राष्ट्रीय अपराध जांच पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया था ।

सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य जाँचकर्ताओं, फोरंसिक टीमों और अन्य अधिकारियों के लिए एक मंच तैयार करना था जो साइबर संबंधित अपराधों से निपटने के लिए विभिन्न तरीकों और उपायों पर चर्चा करें ।

साइबर सुरक्षा हमारे सिस्टम, नेटवर्क, उपकरणों और कार्यक्रमों को दोषपूर्ण सोफ्टवेयर के हमलों से बचाती है । इस प्रकार अपराधियों द्वारा जानकारी की अवैध पहुँच को रोका जा सकता है ।

साइबर सुरक्षा के प्रकार

1. नेटवर्क सुरक्षा
2. क्लाउड सुरक्षा
3. सूचना सुरक्षा
4. एंड-यूजर सुरक्षा
5. एप्लीकेशन सुरक्षा

निष्कर्षः साइबर क्राइम दिन-प्रतिदिन अपने पैर फैलाता जा रहा है । इससे बचने का सबसे उचित तरीका सुरक्षा के उपायों का पालन करना है । ऐसे कई तरीके हैं जिनके द्वारा हम अपनी गोपनीय जानकारी को लीक होने से बचा सकते हैं । हालांकि हमें जागरूकता पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि रोकथाम इलाज से बेहतर है । विशेषकर तब तक जब तक इलाज उपलब्ध नहीं है ।

****

शिखा गोयनका
स.ले.अ.

नीड़

शर्मा जी का परिवार छोटा एवं खुशहाल था । दोनों बच्चों को उन्होनें उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेज दिया था । बेटा और बहू तो विदेश में ही बस चुके थे । अभी पिछले महीने ही बेटी का विवाह भी उन्होंने बड़ी धूम-धाम से अमेरिका में बसे एक डॉक्टर से करवाया था । हालांकि शर्मा जी और उनकी पत्नी काफी आरामदायक जीवन व्यतीत कर रहे थे किंतु कहीं न कहीं एक खालीपन उनके मन में घर करता जा रहा था ।

यह कहानी सिर्फ शर्मा जी की नहीं है । बल्कि अब तो यह आम बात हो चुकी है । बेहतर जीवन की तलाश में पहले तो माँ बाप अपने बच्चों को बाहर पढ़ने भेज देते हैं । फिर जब वही बच्चे उनसे दूर अपनी एक अलग दुनिया बसा लेते हैं तो उन्हें अकेलापन कचोटने लगता है । बेहतर बनने की चाह पहले लोगों को गाँव से शहर लाई, फिर शहर से मेट्रो सिटी और अब विदेश । किंतु क्या यह गलत है ?

हर इंसान अपने जीवन को निरंतर बेहतर बनाना चाहता है । विदेशों की अच्छी नौकरियाँ नौजवानों को आकर्षक लगती है । वहां का रहन-सहन, तौर तरीके सब नया और मनमोहक लगता है और वे वापस अपने देश लौटना नहीं चाहते । ऐसे में उनके बूढ़े माता-पिता अकेले रह जाते हैं । किंतु क्या हम अपने बुजुर्गों के अकेलेपन को बाँटने के लिए कुछ नहीं कर सकते ? क्या उम्र के अंतिम पड़ाव पर उन्हें अपने ही नीड़ में थोड़ी सी जगह और सहारा नहीं मिल सकता ?

आज इसी अकेलेपन को बाँटने के लिए बुजुर्ग छात्र-छात्राओं को पेईंग गेस्ट रखने लगे हैं । इससे उनका अकेलापन भी कम हो जाता है और दूसरे शहर जाकर पढ़ाई करने वाले छात्र-छात्राओं को भी माता-पिता की उतनी कमी महसूस नहीं होती ।

क्या आपके आस-पास भी ऐसे कोई बुजुर्ग दंपति हैं जिन्हें अपनेपन के एक छोटे से अहसास की जरूरत है । क्या आपका थोड़ा सा समय किसी बूढ़े चेहरे पर मुस्कान ला सकता है ? सोचिएगा जरूर ।

****

स्वतंत्रता दिवस 2022 समारोह की कुछ झलकियाँ

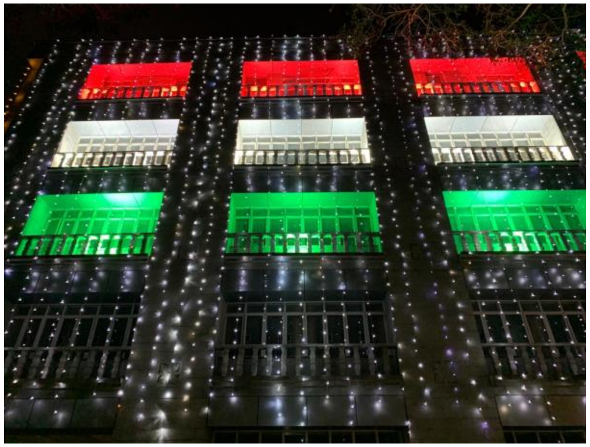

आज़ादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 15 अगस्त 2022 को रोशनी से जगमगाता कार्यालय परिसर

आरूषि यादव
सुपुत्री श्री प्रदीप यादव / वरिष्ठ लेखाकार

जीवन

,

प्यार से हाथ थामें चलने का नाम है जीवन

एक दूसरे से सीखते-सिखाते चलने का नाम है जीवन

संघर्षों से भरे रास्ते पर चलने का नाम है जीवन

मुश्किलों में भी फूल खिलाते, मुस्कुराते चलने का नाम है जीवन

कुछ तेरी, कुछ मेरी खट्टी-मिट्ठी यादों का नाम है जीवन

एक दूसरे की कमियों को सुधारने व अपनाने का नाम है जीवन

सुख के, दुःख के, खुशी के, आँसुओं के सफर का नाम है जीवन

जब कोई मुस्कुराए, तो हम भी मुस्कुराए उसी का नाम है जीवन

किसी के होठों पर हँसी लाने का नाम है जीवन

रोते को हँसाने का नाम है जीवन

दुःख को सुख में बदलने का नाम है जीवन

कठिन परिश्रम, अग्निपथ, मेहनत करने का नाम है जीवन

अपने लक्ष्य पर पहुँचने का नाम है जीवन

दूसरों का भी हित सोचने का नाम है जीवन

सुख के सागर के साथ, दुःख का जहर पीने का नाम है जीवन

छोटे-बड़ों के आदर सम्मान को बनाए रखने का नाम है जीवन ।

सुंदर मोती की लड़ियों का नाम है जीवन

काँटों से चुभने वाले हार का नाम है जीवन

क्या है दोस्तों ये जीवन और कुछ नहीं,

तेरी-मेरी हम सबकी साँसों से बँधी डोर का नाम है जीवन

****

अभिषेक कुमार
डी.ई.ओ. (ग्रेड बी)

उपयोगी

एक युवक ऋषि के पास ज्ञान प्राप्ति के लिए आया । ज्ञान प्राप्ति के बाद शिष्य ने गुरूदक्षिणा देने का आग्रह किया । इस पर ऋषि ने कहा – दक्षिणा में मुझे वह चीज चाहिए जो बिल्कुल व्यर्थ हो । शिष्य आज्ञा लेकर व्यर्थ चीज की खोज में निकल पड़ा । रास्ते में मिट्टी दिखी तो उसे मिट्टी से ज्यादा व्यर्थ कुछ नहीं लगा । उसने मिट्टी की ओर हाथ बढ़ाया तो मिट्टी बोल पड़ी –

"तुम मुझे व्यर्थ समझ रहे हो । तुम्हें पता नहीं है कि इस दुनिया का सारा वैभव मेरे ही गर्भ से प्रकट होता है । ये विविध वनस्पतियां, ये रूप-रस और गंध कहाँ से आते हैं ?"

शिष्य आगे बढ़ गया । थोड़ी दूर चलने पर उसे एक पत्थर पड़ा मिला । शिष्य ने सोचा इसे ही ले चलता हूं । जैसे ही उसने पत्थर उठाने के लिए हाथ बढ़ाया तो पत्थर बोला-

"तुम इतने ज्ञानी प्रतीत होते हो, फिर भी मुझे व्यर्थ मान रहे हो ।"

क्या तुम्हे मेरी महत्ता का पता नहीं है ? तुम अपने भवन और अट्टालिकाएं किससे बनाते हो ? तुम्हारे मंदिरों में किसे गढ़कर देव प्रतिमाएं स्थापित की जाती है ? मेरे इतने उपयोग के बाद भी तुम मुझे व्यर्थ मान रहे हो । यह सुनकर शिष्य निरुत्तर हो गया और वह वहां से भी चल दिया । इसके बाद कई और ऐसी चीजें उसने गुरु जी के लिए लेनी चाही लेकिन उसे हर जगह काम की चीजें ही नजर आती । उसने सोचा कि जब मिट्टी और पत्थर इतने उपयोगी हैं तो आखिर व्यर्थ क्या हो सकता है ? उसके मन से आवाज आई कि सृष्टि का हर पदार्थ अपने आप में उपयोगी है ।

****

तरूण
सुपुत्र श्री संजय कुमार
डी.ई.ओ.

मेरे पापा

मेरे प्यारे प्यारे पापा,
मेरे दिल में रहते पापा...
मेरी छोटी सी खुशी के लिए
सब कुछ सह जाते हैं पापा,
मेरे प्यारे प्यारे पापा।
मेरे दिल में रहते पापा....
पूरी करते मेरी हर इच्छा,
उनके जैसा नहीं है कोई अच्छा,
मेरे प्यारे-प्यारे पापा।
मेरे दिल में रहते पापा.....
मेरी माँ जब भी डांटे,
मुझे दुलारते मेरे पापा।
मेरे प्यारे-प्यारे पापा ।
मेरे दिल में रहते पापा.....
शाम को जब ऑफिस से आते,
मेरे लिए ढेर सारी चीजें लाते,
लाड़ जताते प्यार लुटाते,
मुझे अपने गले लगाते,
मेरे प्यारे-प्यारे पापा।
मेरे दिल में रहते पापा......
भगवान से बस एक आस लगाऊँ,
पापा के साथ अपना सारा जीवन बिताऊँ,
मेरे प्यारे-प्यारे पापा।
मेरे दिल में रहते पापा .....

****

अशोक टी.बी.
सहायक लेखाधिकारी

मेरी अमृतसर यात्रा

20 जून सुबह की बात है जब मैं और मेरी पत्नी दिल्ली हवाई अड्डे के टर्मिनल 3 पर अमृतसर के लिए उड़ान की प्रतीक्षा कर रहे थे। जीवन में पहली बार अमृतसर भ्रमण के लिए हम बहुत उत्साहित थे। दिल्ली एयरपोर्ट से अमृतसर तक की उड़ान का समय केवल 45 मिनट ही था। हवाई अड्डे से आसमान एकदम साफ दिखाई दे रहा था। अमृतसर के गुरु रामदास हवाई अड्डे से बाहर आते ही हमारे सिख टूर ऑपरेटर, प्रिंस ने हमें "सत श्री अकाल" कहते हुए हमारा स्वागत किया। वहाँ से वह हमें ब्रदरहुड ढाबे पर नाश्ते के लिए ले गया। ब्रदरहुड ढाबा एक मशहूर और पर्यटकों का पसंदीदा ढाबा है। नाश्ता करने के बाद टूर ऑपरेटर (सरदार जी) ने हमें स्वर्ण मंदिर के पास प्री-बुक लॉज में छोड़ दिया। दोपहर 1 बजकर 30 मिनट पर हमें तैयार रहने के लिए कहा ताकि हम वाघा बार्डर पहुँचकर प्रतिदिन होने वाले बीटिंग रिट्रीट कार्यक्रम का आनंद ले सकें। निर्धारित समय पर प्रिंस हमें लेने आ गया। 20 किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद हम ज़ीरो पॉइंट पर पहुँचे। अटारी में शाही किला नाम के भोजनालय में हमने भोजन किया। इसके बाद करीब 3 बजकर 30 मिनट पर प्रवेश के लिए लोग पंक्ति में लगने शुरू हो गए। आधे घंटे बाद पुरुष और महिलाएं अलग-अलग पंक्ति में सुरक्षा जांच के लिए आगे बढ़ने लगे। उसके बाद दर्शकों के लिए बने दर्शक-दीर्घा में हम लोग जाकर बैठ गए। वहां से अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर बना द्वार दिखाई दे रहा था। यहाँ पर प्रतिदिन आयोजित होने वाला वाघा-बार्डर समारोह या बीटिंग रिट्रीट समारोह पर्यटकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। देश के कोने-कोने से आए लोगों की भीड़ ने सुरक्षा बल के जवानों के जोश को सातवें आसमान पर पहुंचा दिया था। पाकिस्तान की तरफ भी दर्शक बैठे हुए थे।

हर शाम, सूर्यास्त से ठीक पहले, भारत और पाकिस्तान के सुरक्षा बल सैनिक इस सीमा चौकी पर मिलते हैं और सैन्य सौहार्द दिखाने के लिए 30 मिनट के कार्यक्रम में शामिल होते हैं। चारों तरफ देशभक्ति गानों एवं नारों की गूंज होती है । इस प्रकार बाघा बार्डर भारत और पाकिस्तान के द्वारों पर होने वाले समारोह के लिए प्रसिद्ध है। बी.एस.एफ. कमांडर ने सभी दर्शकों का खूबसूरत अंदाज़ में स्वागत किया। उन्होंने बताया कि यह समारोह 1959 से लगातार आयोजित हो रहा है। इस समारोह में बी.एस.एफ. की महिला गार्ड को भी शामिल किया जाता है।

इस शानदार समारोह को देखने के बाद हम लोग पुनः शाही किले पर पहुँचे जहाँ प्रिंस हमारे लिए कार स्टैंड पर इंतज़ार कर रहा था। इसके बाद हम कार द्वारा शहर के टाउन हॉल में स्थित विभाजन संग्रहालय पहुँचे। विभाजन संग्रहालय, लाखों लोगों की कहानियों और आघात पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पूरी दुनिया में पहला संग्रहालय है | शाम के लगभग साढ़े सात बज गए थे और यहाँ से लॉज पैदल दूरी पर ही था जिसका रास्ता स्वर्ण मंदिर से होकर गुजरता था। रात का भोजन करके हमें लॉज पहुँचना था। लॉज जाते समय हम स्वर्ण मंदिर का भव्य नज़ारा देखकर मंत्रमुग्ध हो गए। यह मंदिर श्री रामदास जी द्वारा स्थापित किया गया था।

स्वर्ण मंदिर को हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है। मैंने अपनी पत्नी के साथ कई जगह सेल्फी क्लिक की। इस दौरान मंदिर के एक सेवक सरदारजी ने मेरी पत्नी को सेल्फी लेते समय भी सिर ढक कर रखने के लिए चेताया। हम लोग दूसरे दिन सुबह-सुबह स्नान करके स्वर्ण मंदिर में मत्था टेकने पहुँच गए। सरोवर के ऊपर बने पुल से पंक्ति में जाते हुए लगभग डेढ़ घंटा लग गया।

जब हम मंदिर के अंदर पहुँचे, तब गुरु ग्रंथ साहिब की गुरु वाणी के बीच मत्था टेकते हुए मैंने मन्नत मांगी कि पुनः इस पावन धरती पर आएँ और धर्म की रक्षा हो, अधर्म का नाश हो। मत्था टेकने के बाद बाहर निकलकर हमने प्रसाद ग्रहण किया।

यहाँ का इतिहास 400 साल पुराना है । यह गुरुद्वारा सिखों की आस्था का केंद्र है । 10 सिख गुरुओं में से चौथे गुरु रामदास साहिब ने 15वीं सदी में यह गुरुद्वारा और सरोवर बनवाया था, जहाँ सभी लोग प्रार्थना कर सकें। यहाँ पर्यटकों की भीड़ हमेशा लगी रहती है। इस शहर का नाम यहाँ के पवित्र तालाब अमृत सरोवर के नाम पर पड़ा। यही अमृत सरोवर आगे चलकर अमृतसर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस मंदिर को बनाने में 160 किलोग्राम 24 कैरेट सोने का इस्तेमाल किया गया था।

सन 1762 में इस्लामिक शासकों ने विरासत स्थल को नष्ट कर दिया था। स्वर्ण मंदिर के अलावा जलियाँवाला बाग भी इतिहास में अंग्रेजों की क्रूरता के लिए प्रसिद्ध है जोकि स्वर्ण मंदिर से नजदीक ही है ।

स्वर्ण मंदिर के बाद प्रिंस हमें दुर्गयाना मंदिर ले गया। यह मंदिर अमृतसर के लोहगढ़ गेट पर स्थित है। यह मंदिर भी स्वर्ण मंदिर जैसी वास्तुकला शैली में बना हुआ है तथा इसे एक झील के बीच में

बनाया गया है। मंदिर में संगमरमर का प्रयोग व्यापक रूप से किया गया है। यह मंदिर देवी दुर्गा को समर्पित है और इसके अलावा शीतला माता और हनुमान जी की मूर्तियाँ भी मंदिर में स्थापित की गई हैं। मंदिर में दर्शन करने के बाद बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी जिसके साथ हमारे प्रवास का आखिरी चरण भी शुरू हो गया। लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित श्री गुरुरामदास हवाई अड्डे पर जाने के लिए हम लोग चल पड़े। शाम को बेंगलुरु के लिए इंडिगो की उड़ान थी। तीन घंटे की हवाई यात्रा के बाद हम ढेर सारी यादों को संजोए बेंगलुरु लौट आए।

****

प्राजंल यादव
सुपुत्र श्री प्रदीप यादव
वरिष्ठ लेखाकार

मेरा स्कूल

यह है मेरा प्यारा स्कूल
नहीं सकता मैं इसको भूल

माँ ने मुझको जन्म दिया
और दिया ढेर सारा प्यार
स्कूल ने मेरा ज्ञान बढ़ाकर
मेरा जीवन दिया सँवार

खूब खेलों और खूब पढ़ो
कहती यह टीचर हमारी
देश की सेवा करने की
हम सबकी है ज़िम्मेदारी

कोई बनेगा वकील तो कोई नेता
कोई डाक्टर तो, कोई होगा इंजीनियर
भारत को विश्व गुरु बनाना है
हर किसी को शिक्षित बनाना है
यही मेरे प्यारे स्कूल का मानना है

****

शिवांकु चतुर्वेदी
लिपिक

फौजी की छुट्टी

ना चाहते हुए भी छुट्टी खत्म होते ही,
हर बार घर को छोड़ना आता है।
हम वो लोग हैं साहब जिन्हें हर एक
पल में से,
हजारों खुशियाँ निचोड़ना आता
है।
बेवजह ही अनजान लोगों से रिश्ता
जोड़ना आता है,
हम वो लोग है साहब जिन्हें हर एक
पल में से।
हजारों खुशियाँ निचोड़ना आता है,

माना कई-कई दिन घर सूने रहते हैं।
कई रातें सवाली होती हैं,
पर जब एक फौजी छुट्टी लेकर घर जाता है।
तो उसके लिए हर दिन होली हर रात दिवाली होती है,
जब यार पुराने मिलते हैं घंटों तक बातें होती हैं।
चौराहे पर कटते दिन बाहों में रातें होती हैं,
जब उसकी गली से गुजरे तो वो खिड़की पे आ जाती है।

इधर-उधर कितना भी देखूँ आखिर
में नज़र,
उससे मिल ही जाती है।
जब भीगी पलकों से वो पूछ ही लेती
है,
कि कब जाना है।

लफ्जों से मैं कुछ न बोल पाता बस,
आँखें भर आती हैं।
उस पगली के इश्क को, माँ के लाड़ को, पिता के प्यार को,
सबको एक ही झटके में छोड़ना आता है।
हम वो लोग है साहब जिन्हें हर एक पल में से,
हजारों खुशियाँ निचोड़ना आता है।

****

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक की अध्यक्षता करती महालेखाकार महोदया

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में भाग लेते अधिकारीगण

अलकनंदा
सुपुत्री श्री चंद्रमणि आजाद
लेखाकार

जिदंगी

कभी तारीफों में, कभी तानों में कटेगी,

ये जिंदगी है यारों, पल-पल घटेगी ।

पाने को कुछ नहीं, ले जाने को कुछ नहीं,

फिर भी क्यूं चिंता करते हो।

इससे सिर्फ खूबसूरती घटेगी,

ये जिंदगी है यारों पल-पल घटेगी ।

बार-बार रफू करता रहता हूं, जिंदगी की जेब,

कमबख्त फिर भी निकल जाते हैं, खुशियों के कुछ लम्हे ।

जिंदगी में सारा झगड़ा ही ख्वाहिशों का है,

ना तो किसी को गम चाहिए।

ना ही खुशियां कम चाहिए,

ये जिंदगी है यारों, पल-पल घटेगी ।

****

रवि भूषण
सहायक लेखाधिकारी

जागृति

आशा क्यों करते हो इन चलती-फिरती लाशों से,
इन्होंने तो बेच दिया है खुद को इन बाजारों में ।
इनको ऐसे देख के भगवान भी रोता होगा,
सृष्टि की इस रचना पर खुद को भी कोसता होगा ।
क्या कोई उस मां की व्यथा को समझ पाया है,
दर्द मिला जिसकी बेटी को और जिंदा जलाया है ।
क्या कभी इस जहाँ में, नया सवेरा होगा,
या ये अंधकार ही हमारा अनंत बसेरा होगा।
अब और इंतजार न हो इन जिंदा लाशों को जगना होगा,
तोड़ना होगा इन जंजीरों को कर्म की आग में तपना होगा।

****

निशा कुमारी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

जल ही जीवन

जल का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। इसके बिना तो पृथ्वी पर जीवन लगभग असंभव सा है। जल पर संकट का अर्थ है कि हमारे जीवन पर संकट है जो कि दिन प्रतिदिन विकराल रूप लेता जा रहा है। जल के बिना तो हम धरती पर मनुष्य की कल्पना तक नहीं कर सकते। इसके बावजूद हम कई बार बहुत सारा जल बर्बाद करते है। धरती का 3 चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है। इस का लगभग 97 प्रतिशत पानी सागर और महासागरों में पाया जाता है जो कि खारा होने के कारण पीने योग्य नहीं है, केवल 3 प्रतिशत जल ही पीने योग्य है जिसमें से 2 प्रतिशत पानी बर्फ और ग्लेशियर के रूप में है । मात्र 1 प्रतिशत पानी पीने योग्य है । इस प्रकार जल के बिना कल की कल्पना नहीं की जा सकती । पृथ्वी पर करीब 32 करोड़ 60 लाख ख़रब गैलन पानी है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है जिसके कारण तापमान में वृद्धि से जल सूख रहा है।

हाथ से हाथ मिलाना है जल को बचाना है।

यह समस्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है और हम यह सोचकर पानी का संरक्षण नहीं करते कि बारिश के मौसम में दोबारा पृथ्वी को पानी प्राप्त हो जाएगा । लेकिन ऐसा नहीं है, बारिश के पानी को भूजल में बदलने की प्रक्रिया इतनी आसान नहीं है क्योंकि हमारे पास जल संचयन के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं है जिससे बारिश का पानी यूं ही नदी-नालों में बह जाता है।

जिन जगहों पर लोग पानी की कमी से जूझ रहे है वहाँ के लोग तो इसके महत्व को समझ रहे हैं, दूसरी ओर जिन जगहों पर पर्याप्त पानी उपलब्ध है, वहाँ लोग अनावश्यक कामों में जैसे फर्श धोना, नालियों में बहाना, कपडे धोने में अत्यधिक पानी का उपयोग करना, गाड़ी धोना आदि जैसे कार्य करके इसे व्यर्थ करते हैं । पानी की असली कीमत तो वही आदमी बता सकता है जो रेगिस्तान की तपती धूप से निकल कर आया हो । सरकारी रिपोर्ट के अनुसार विश्व में करीब 75 प्रतिशत लोग पानी की समस्या से जूझ रहे हैं

और आगामी वर्षों में यह समस्या और विकराल रूप धारण कर लेगी । 22 मार्च को मनाए जाने वाले "विश्व जल दिवस" का मुख्य उद्देश्य जल का संरक्षण करना है जिसको महज एक दिवस के रूप में नहीं मनाया जाना चाहिए बल्कि इसका उद्देश्य होना चाहिए कि हम ज्यादा से ज्यादा जल संरक्षण करें ।

समझदारी से नहीं बरतेंगे, तो बूँद-बूँद को तरसेंगे।

यदि पानी का अंधाधुंध प्रयोग इसी तरह चलता रहा और हम ने जल सरंक्षण का कोई स्थायी समाधान नहीं ढूँढा तो वह दिन दूर नहीं जब हम पानी की एक-एक बूँद के लिए तरसेंगे । पानी के अभाव से अकाल मृत्यु, जानवरों की सामूहिक मौतें और संस्कृति के लोप हो जाने की स्थिति पैदा हो जाएगी ।

सरकारी आंकड़ो के अनुसार प्रदूषित जल में आर्सेनिक, लोहांस आदि विषैले तत्वों की अधिकता के कारण लोगो में स्वास्थ्य संबंधी समस्या देखने को मिलती है । डब्ल्यू.एच.ओ. की रिपोर्ट यह भी उजागर करती है कि लगभग 85 प्रतिशत बीमारियों का कारण असुरक्षित एवं अशुद्ध जल है । विश्व में करोड़ों लोग अशुद्ध जल पीने को मजबूर है और इसी अशुद्ध जल से अपना गुजारा कर रहे हैं ।

दूषित ना करो जल को, नष्ट ना करो आने वाले कल को ।

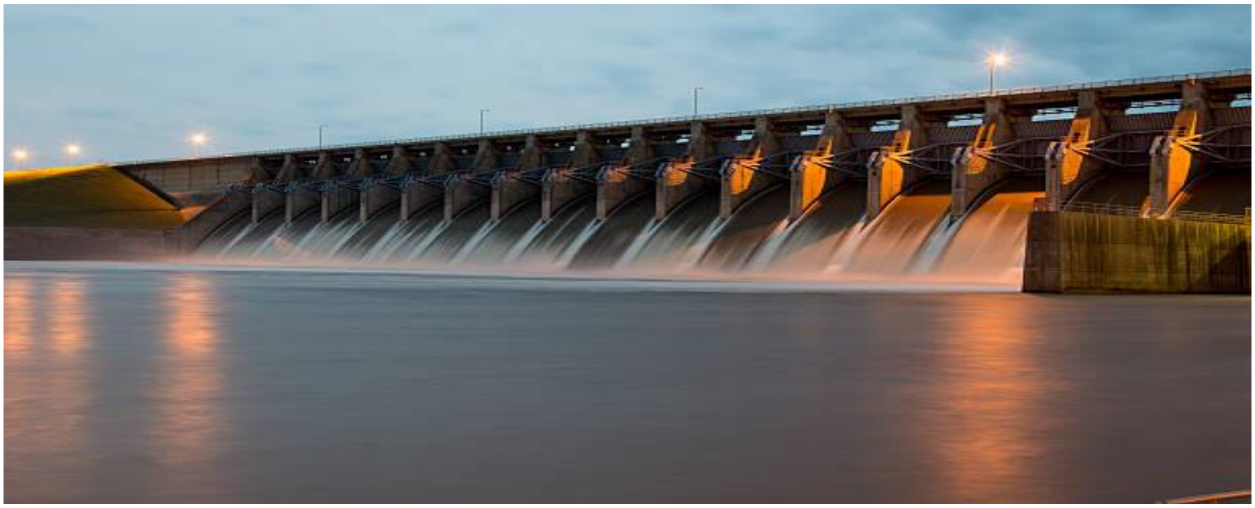

वर्षा जल का संचयन

वर्षा जल का संरक्षण करके भी जल को बचाया जा सकता है । अधिकतर देखने में आता है कि वर्षा का जल व्यर्थ ही नदी नालों में बहता है । इसके लिए वर्षा का जल एक जगह एकत्रित किया जाना चाहिए और इस जल का उपयोग कृषि आदि कार्यों में करना चाहिए।

भूमिगत जल

भूमि के अन्दर स्टोरेज बनाकर इसका संग्रहण किया जा सकता है । वर्षा एवं घर के व्यर्थ जल को भूमि के अन्दर स्टोर करके और उसका भिन्न कार्यो में उपयोग करना जल संरक्षण को बढ़ावा देता है।

घरेलू उपयोग में जल का संरक्षण

1. घर के नलों और टंकियों में होने वाले रिसाव को ठीक कराएँ ।
2. उपयोग न होने पर नल को बंद कर दें ।
3. हर बार शौचालय को फ्लश करने के लिए कम पानी वाले फ्लश का प्रयोग करें ।
4. सब्जियाँ, बर्तन आदि को बहते हुए नलों के नीचे धोने के बजाए कटोरों में भरे पानी से धोने चाहिए ताकि पानी की बर्बादी को रोका जा सके ।
5. घर में नहाते समय झरने की जगह बाल्टी एवं टब का इस्तेमाल करें ।
6. घरों की नालियों के पानी को गढ्ढे बना कर एकत्र किया जाए और पेड़-पौधों की सिंचाई के काम में लिया जाए ।
7. नदी नालों में घर की गंदगी न डाली जाए ।
8. जंगलों का कटाव रोका जाए और ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण किया जाए।

"ना करो जल को नष्ट, सहना पड़ेगा जीवन भर कष्ट"

कुछ वर्षों पहले पानी को कोई नहीं बेचता था पर आज अगर आप देखेंगे तो कई कंपनियों ने इसको बेचना शुरू कर दिया है क्योंकि सभी जगह स्वच्छ पानी उपलब्ध नहीं है इसलिए लोग पानी खरीद कर पीने को मजबूर हैं । आज 1 लीटर पानी की बोतल का दाम 20-25 रुपए हो चुका है । अगर जल संरक्षण और जल को स्वच्छ नहीं रखा जाएगा तो वो दिन दूर नहीं जब 1 लीटर पानी की बोतल को 100-200 रुपए दे कर खरीदना पड़ेगा । अगर हमें आने वाली पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित करना है तो जल को संरक्षित करना बहुत आवश्यक है । इस कार्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति को साथ आना होगा तभी हम अपने मिशन में सफल हो पाएंगे।

"अगर करना है भविष्य को सुरक्षित, करना होगा बूँद-बूँद जल को संरक्षित"

****

कल्याण अनुभाग द्वारा आयोजित चिकित्सा जांच शिविर

कार्यालय में आयोजित चिकित्सा जांच शिविर के दौरान स्वास्थ्य जांच करवाते पदाधिकारी

चिकित्सा जांच टीम के साथ कल्याण अनुभाग के पदाधिकारी

चिकित्सा जांच शिविर के दौरान नेत्र जांच कराते कार्यालय के पदाधिकारी

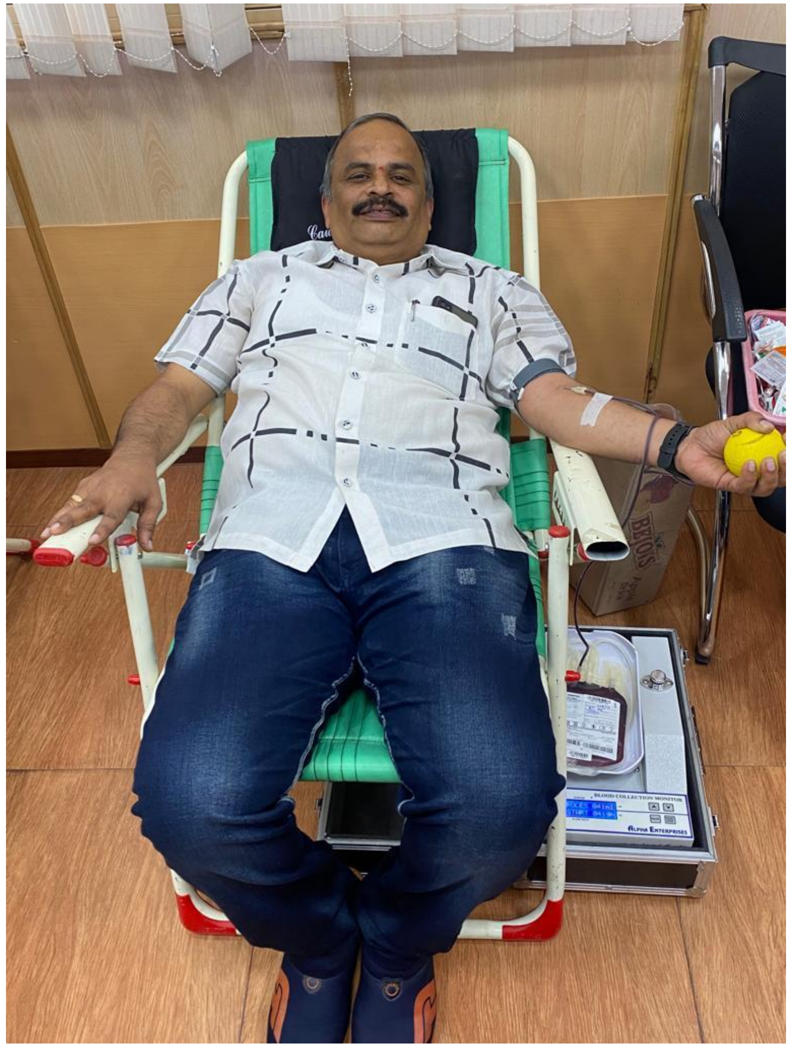

चिकित्सा जांच शिविर में रक्त दान करते हुए कार्यालय के पदाधिकारी

संदीप
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

माँ

संस्कृत में एक कहावत है “जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी” अर्थात जननी (जन्म देने वाली या माँ) एवं जन्मभूमि तो स्वर्ग से भी प्रिय होती है । किसी लेखक ने क्या खूब लिखा हैः “भगवान हर जगह नहीं हो सकता, इसीलिए उसने माँ बनाई” । उपरोक्त कथनों से ही माँ की महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता हैं । किसी के भी जीवन में माँ सर्वप्रथम और सबसे अच्छी व महत्वपूर्ण होती है क्योंकि कोई भी उनके जैसा सच्चा और वास्तविक नहीं हो सकता । वो एकमात्र ऐसी है जो हमारे अच्छे और बुरे समय में साथ देती है । माँ से बेहतर किसी को भी नहीं माना जा सकता है, उनके प्यार और देख-रेख को भगवान का दूसरा रूप बताया गया है। किसी लेखक ने लिखा भी हैः

ईश्वर का दूसरा रूप है माँ
ममता की गहरी झील है माँ
वो घर किसी जन्नत से कम नहीं
जिस घर में ईश्वर की तरह पूजी जाती है मां

माँ तो प्रकृति की तरह होती है जो हमेशा हमको देने के लिए जानी जाती है, बिना कुछ हम से वापिस लिए । कोई भी इंसान या जानवर, पशु या पक्षी सबसे ज्यादा प्यार अपनी माँ से ही करता है क्योंकि आँख खुलते ही सबसे पहले वह अपनी माँ को महसूस करता है, देखता है, स्पर्श करता है और एक माँ भी अपनी संतान से सबसे ज्यादा प्रेम करती है क्योंकि कोई भी माँ अपनी संतान को बाकी दुनिया से 8 -10 महीने ज्यादा जानती है । वह कोख में बिना देखे ही अपनी संतान को प्यार करती है । जन्म के समय सबसे ज्यादा खुश भी माँ ही होती है क्योंकि वह खुद मौत को मात देकर हमें दुनिया में लाती है । माँ और बच्चों के बीच एक खास बंधन होता है जो कभी खत्म नहीं हो सकता है । वो बिना बताए ही हमारे दिल की बात

जान लेती है । माँ और संतान के प्रेम का अनुमान हम इस बात से लगा सकते हैं कि जब हम बोलना शुरू करते हैं तो हमारे मुँह से पहला शब्द ही ‘माँ’ निकलता है ।

इस धरती पर माँ ही हमारा पहला प्यार, पहली शिक्षक एवं पहली दोस्त होती है । वही हमें जीवन का सच्चा मार्ग दर्शन और व्यवहार करने का तरीका सिखाती है । माँ के प्यार को छोड़कर दुनिया में कोई भी प्यार ऐसा नहीं है जो बहुत मजबूत, हमेशा के लिए निःस्वार्थ, शुध्द एवं समर्पित हो । वो हमें छोटे और असमर्थ बच्चे से मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौध्दिक मनुष्य बनाती है । वह जीवन भर हमारे लिए उपलब्ध रहती है तथा ईश्वर की तरह हमारी परवरिश करती है । अगर इस धरती पर कोई भगवान है तो वो हमारी माँ है । वो हमारे जीवन की सबसे बेहतरीन महिला होती है जिसकी जगह कोई भी नहीं ले सकता । माँ जाने किस मिट्टी की बनी होती है? घर में किसी चीज का अभाव होने पर माँ को उस चीज की जरूरत ही नहीं होती, घर में खाना कम होने पर माँ को भूख ही नहीं लगती है, औलाद के बदलने पर भी माँ नहीं बदलती ।

कई गीत-भजनों में कहा गया है कि “पूत-कपूत सुने हैं पर ना माता सुनी कुमाता” । औलाद द्वारा कितनी भी बड़ी गलती करने पर माँ उसे दिल से माफ कर देती है, कोई द्वेष नहीं रखती । प्रति वर्ष एक बार मातृ दिवस मनाया जाता है लेकिन सच तो यह है कि कोई भी एक दिन माँ की महत्ता को व्यक्त नहीं सकता है । वेद-पुराणों, पौराणिक ग्रंथों में बताया गया है कि कैसे देवी-देवताओं ने भी माँ के वात्सल्य को पाने के लिए मानव रूप में जन्म लिया है । माँ की महत्ता को शब्दों में बाँध पाना असंभव है । इतनी महत्ता

होने के बावजूद कई बार हम उनको दुःखी भी कर देते हैं । कलियुग की बहुत सी औलादें माँ-बाप की बूढ़ापे की लाठी बनने की बजाए उन्हें वृध्दाश्रमों में भेज देती हैं । उन्हें घर के लिए बोझ समझते हैं । यहाँ तक की उनके साथ मारपीट भी करते हैं । लेकिन एक सच्ची बात यह भी है कि जो औलादें अपने माँ-बाप का दिल दुखाते हैं वे जीवन में कभी भी खुश नहीं रह सकते हैं।

हमें यह समझने की जरूरत है कि जिस प्रकार बाल्यकाल में हमें अपने माँ-बाप की जरूरत होती है, ठीक उसी प्रकार बूढापे में माँ-बाप को हमारी जरूरत होती है । अगर हमारे माँ-बाप खुश है तो हमें किसी तीर्थ यात्रा की जरूरत नहीं । अतः हमें अपने माँ-बाप को हमेशा खुश रखना चाहिए, उनकी सेवा करनी चाहिए । मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह दुनिया भर में प्रत्येक माँ-बाप को खुश रखे ।

****

खुशबू कुमारी
लेखाकार

बचपन

मैं डरता हूँ
अपना बचपन खोने से
सहेज कर रखा है उसे
दिल की गहराईयों में
जब भी कभी व्यवस्था
भर देती है आक्रोश मुझमें
जब भी कभी सच्चाई
कड़वी लगती है मुझे
जब भी कभी नहीं उबर पाता
अपने अंतर्द्वंदों से
जब भी कभी घेर लेती है उदासी
तो फिर लौट आता हूँ
अपने बचपन की तरफ
और पाता हूँ एक मासूम
एवं निश्चल सा चेहरा
सारे दुख दर्द से परे
अपनी ही धुन में सपने बुनता।

****

तिलकशांति
पर्यवेक्षक

पी.वी. सिंधु

भारत की उम्दा बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी.सिंधु का पूरा नाम पुसर्ला वेंकट सिंधु है । उन्होंने 2020 के ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया और देश के लिए रजत पदक भी जीता । ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनी । सिंधु भारत की उत्कृष्ट बैडमिंटन एकल खिलाड़ी है जिन्होंने वर्ष 2016 में चाइना ओपन प्रतियोगिता अपने नाम की।

5 जुलाई 1995 में पी.वी. सिंधु का जन्म हुआ था। इनके पिताजी का नाम पी.वी. रमण और माता का नाम पी.विजया है। ये दोनों ही पूर्व वॉलीबॉल खिलाड़ी रह चुके हैं। श्री रमण को वर्ष 2000 में अर्जुन सम्मान से नवाजा गया था। एक खिलाड़ी परिवार में जन्म लेने वाली सिंधु की रुचि बैडमिंटन में थी। 2001 के ऑल इंग्लैंड ओपन बैडमिंटन चैंपियन बने पूलेला गोपीचंद के जीवन से प्रभावित होकर सिंधु ने अपना कैरियर भी इसी खेल में चुना।

पी.वी. सिंधु ने जूनियर एशियन बैडमिंटन चैम्पियन 2009 में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कांस्य पदक जीता और वर्ष 2010 में रजत पदक जीता। वर्ष 2012 में उन्होंने चीन की स्वर्ण पदक विजेता को हराकर सबको चौंका दिया और अपने कैरियर की सर्वश्रेष्ठ सूची में 15वां स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2016 के ओलंपिक खेलों में भारत को बैडमिंटन में रजत पदक दिलवाया। पी.वी. सिंधु को पदमश्री, अर्जुन अवार्ड एवं राजीव गांधी खेल रत्न आदि पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

अभी हाल ही में, बी.डब्ल्यू.एफ. चैंपियनशिप में उन्होंने एक बार फिर से रजत पदक अपने नाम किया। पी.वी. सिंधु ने अपनी लगन और कड़ी मेहनत से यह साबित कर दिया है कि यदि हौंसले बुलंद हो तो दुनिया की कोई ताकत आगे जाने से नहीं रोक सकती।

****

<u>हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 की कुछ झलकियाँ</u>

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के दौरान सभा को संबोधित करती महालेखाकार महोदया

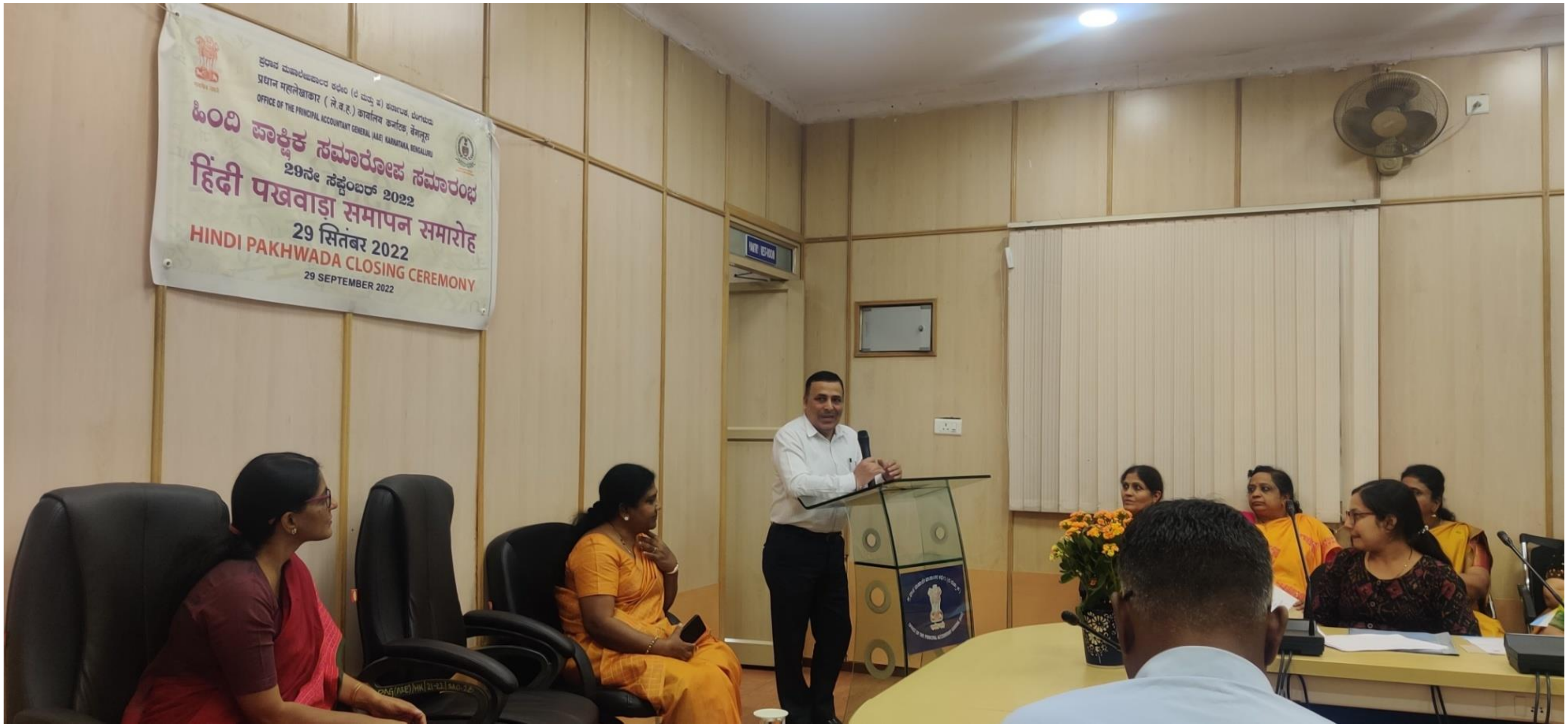

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के दौरान सभा को संबोधित करते मुख्य अतिथि महोदय

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के दौरान सभा में उपस्थित कार्यालय के पदाधिकारी

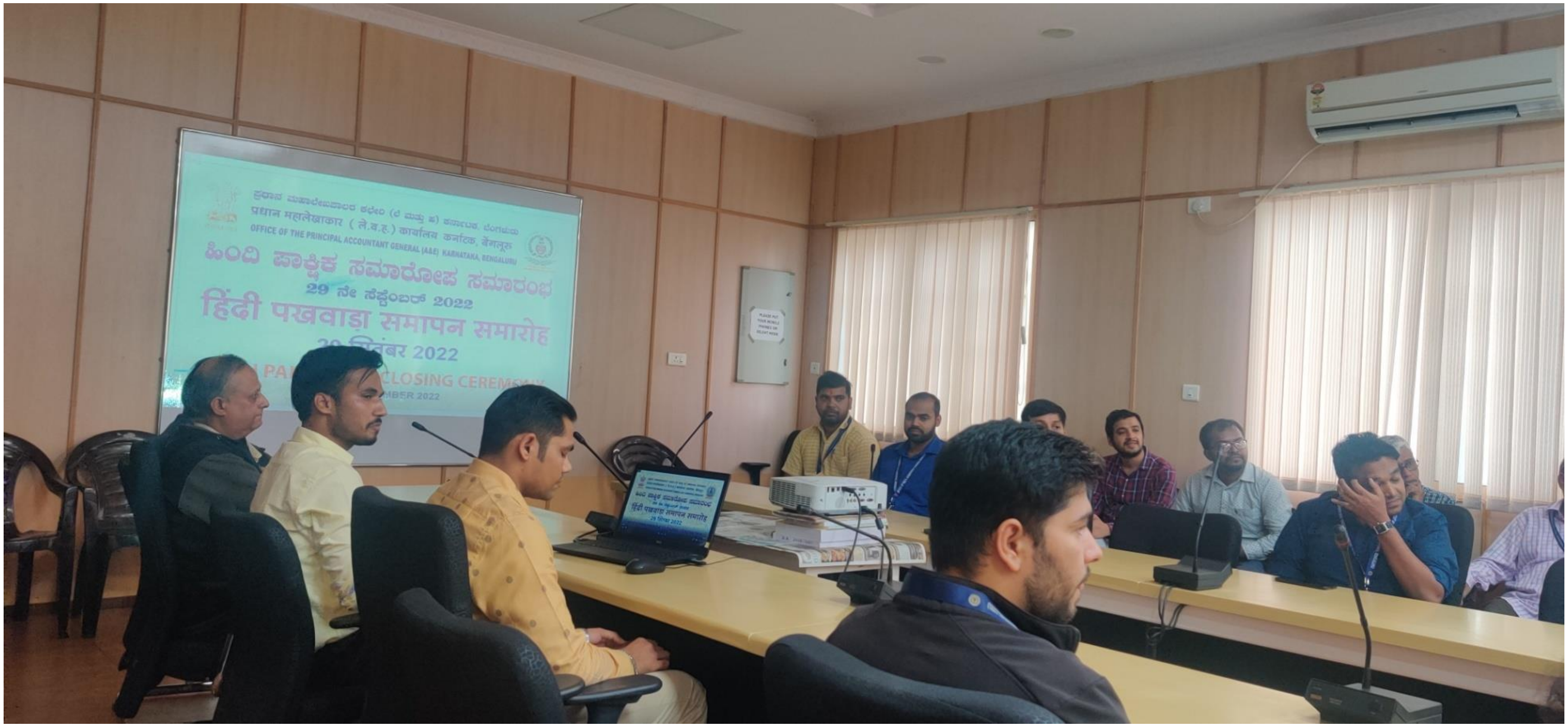

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के दौरान सभा में उपस्थित कार्यालय के पदाधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित अंताक्षरी प्रतियोगिता का संचालन करती श्रीमती ज्योति सुब्रह्मण्यम एवं श्री नंद कुमार

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित एकल गायन प्रतियोगिता में उपस्थित पदाधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित समाचार पत्र एवं कविता वाचन प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित समाचार पत्र एवं कविता वाचन प्रतियोगिता में भाग लेते पदाधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित समूह गायन प्रतियोगिता में प्रस्तुति देते पदाधिकारी

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 के दौरान विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करती महालेखाकार महोदया

हिंदी कक्ष के पदाधिकारी - श्रीमती शिवप्रिया बी., वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष (मध्य में)

श्रीमती निशा कुमारी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक एवं श्री संदीप, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

खेल-कूद की गतिविधियां 2022

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग द्वारा आयोजित हॉकी टूर्नामेंट में दक्षिण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते कार्यालय के पदाधिकारी

गुजरात में आयोजित 36वें राष्ट्रीय खेलों में स्वर्ण पदक विजेता टीम कर्नाटक का प्रतिनिधित्व करते हुए।

4-5 जून 2022 को स्विट्ज़रलैंड में आयोजित FIH हॉकी 5s (पुरुष) टूर्नामेंट में श्री मो. राहिल मौसीन द्वारा सर्वाधिक गोल दागे गए और प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट का अवार्ड जीता

अबहरण सुदेव बी. जकार्ता में आयोजित हॉकी एशिया कप के दौरान मैच खेलते हुए।

एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट 2022 के दौरान भारतीय हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व करते कार्यालय के पदाधिकारी श्री अबहरण सुदेव बी.

भारतीय टीम द्वारा हॉकी एशिया कप 2022 में जीते गए कांस्य पदक के साथ टीम सदस्य, श्री अबहरण सुदेव बी.

<u>कन्नड राज्योत्सव 2022</u>

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित चित्रकारी प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ चित्रकारी
चित्रकारः श्री एस. शशिधर
सहायक पर्यवेक्षक